

इनरेका संस्थान

अंतराष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा और सांस्कृतिक संघ
स्वास्थ्य, शिक्षा, ग्रामीण विकास और अनुसंधान संस्थान)



एक नजर में
(2024-25)

41 वां वर्षगांठ समारोह



इनरेका



शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए डॉ. विनोद कुमार कौशिक, अध्यक्ष इनरेका संस्थान को नर्मदा रतन पुरस्कार-2024 से सम्मानित किया गया है। उन्होंने स्कूलों, आवासीय स्कूलों और छात्रावासों की स्थापना करके आदिवासी छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने सहित अन्य कार्य किए हैं। यह सम्मान माननीय सांसद श्री मनसुखभाई वसावा, पूर्व केंद्रीय जनजातीय मंत्री द्वारा राजपीपला में जिला अधिकारियों और विशिष्ट व्यक्तित्वों की गरिमामय उपस्थिति में प्रदान किया गया।

विषय

- अध्यक्ष के डेस्क से
- पृष्ठभूमि
- परिचय
- विजन
- मिशन
- सिद्धांत और मूल्य
- लक्ष्य और तर्क
- उद्देश्य
- भौगोलिक कवरेज

- भाग 1 : पर्यावरण
- भाग 2 : स्वास्थ्य
- भाग 3 : महिलाएं आधिकारीता
- भाग 4 : व्यावसायिक और
कौशल विकास भाग
- भाग 5 : न्यासी और पदाधिकारीयों
का शिक्षा बोर्ड
- भाग 6 : वित्त का विवरण

अध्यक्ष के डेस्क से

इनरेका संस्थान ने हाल ही में अपनी स्थापना के 40 वर्ष पूरे किए हैं और मुझे सचमुच आश्चर्य हो रहा है कि इस संगठन की स्थापना के 40 वर्ष कैसे बीत गए। मैं भावुक हो गया हूँ। हमने नए संगठन के नामकरण पर गहन विचार-विमर्श किया और अंत में अंतर्राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा सांस्कृतिक संघ (इनरेका संस्थान संस्थान का संक्षिप्त रूप) नाम रखा। इसका उद्देश्य इस आदिवासी क्षेत्र की शिक्षा और सांस्कृतिक विरासत को अंतर्राष्ट्रीय मंचों तक ले जाना था। हालांकि, बुनियादी उद्देश्य पीछे छूट गए और हमने महसूस किया कि बुनियादी ज़रूरतें और सुविधाएं भी इन बुनियादी उद्देश्यों के साथ-साथ समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। इसलिए, हमने मुख्य रूप से 6 क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने का निर्णय लिया, जो इन उद्देश्यों के अनुरूप हैं: जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण, आजीविका, महिला एवं बाल विकास और कौशल विकास। हमने इन क्षेत्रों में उत्कृष्टता हासिल की है। इस वर्ष 2024-25 में; जब इनरेका संस्थान अपने 40 वर्ष पूरे कर रहा है और 41वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है, तब हमने वार्षिक दिवस 2024-25 मनाया, जो एक भव्य, शानदार और यादगार आयोजन था। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री और जनजातीय विकास मंत्री माननीय श्री कुबेर भाई दिंडोर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उनके साथ भरूच के सांसद माननीय श्री मनसुखभाई वासावा भी मौजूद थे। इस क्षेत्र के अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने आईएनआरईसीए संस्थान द्वारा आदिवासी समुदाय के सभी वर्गों को दी गई सेवाओं की सराहना की, जिन्हें संगठन द्वारा संचालित गतिविधियों से लाभ हुआ है। उन्होंने संगठन और उसके समर्पित कर्मचारियों को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। मैं अपने सभी सहयोगियों और शुभचिंतकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने 40वीं वर्षगांठ के अवसर पर आईएनआरईसीए के विजन और मिशन को साकार करने में हमेशा अपना पूरा सहयोग दिया है। इनरेका संस्थान को 41वीं वर्षगांठ के अवसर पर हमारी हार्दिक शुभकामनाएं। और हम कोविड-19 महामारी की इस स्थिति से सफलतापूर्वक निपट सकते हैं।



दिनांक: 08/05/2025
स्थान: डेडियापाड़ा

ह./-डॉ. विनोद कुमार कौशिक
संस्थापक और संरक्षक
इनरेका संस्थान

पृष्ठभूमि

आदिवासी शब्द अपने साथ देहाती सादगी, पर्यावरण के प्रति जागरूकता और प्रकृति के साथ सामंजस्य में रहने का संदेश लेकर चलता है। भारत में आदिवासी सबसे हाशिए पर स्थित समुदायों में से एक हैं, जिनकी बुनियादी ज़रूरतों जैसे स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और आजीविका के अवसरों तक पहुँच बहुत कम या न के बराबर है। प्राकृतिक संसाधनों, विशेष रूप से जंगलों के धीरे-धीरे विनाश के कारण, जो पारंपरिक रूप से इन स्वदेशी संस्कृतियों को सहारा देते हैं, उन्हें अपने अस्तित्व के लिए बाहरी सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक शक्तियों के अनुकूल होना पड़ता है। विभिन्न आदिवासी समुदायों की स्वदेशी और पारंपरिक संस्कृतियाँ बाहरी आर्थिक शक्ति द्वारा नष्ट और प्रतिस्थापित की जा रही हैं, और यह विकास-केंद्रित मॉडल सामाजिक अन्याय और पर्यावरण क्षरण में वृद्धि का कारण बनता है। लेकिन एक जन-केंद्रित मॉडल स्थानीय संसाधनों के सतत विकास की परिकल्पना करता है ताकि क्षेत्र में रहने वाले लोगों की ज़रूरतों को पूरा किया जा सके और इस प्रकार उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार किया जा सके। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है: संसाधनों पर स्थानीय नियंत्रण को मजबूत करना; भागीदारी को व्यापक बनाना; विविधतापूर्ण और आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय संसाधनों का स्वामित्व और प्रबंधन।

परिचय

इनरेका संस्थान अंतर्राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा एवं सांस्कृतिक संघ का संक्षिप्त रूप है। इनरेका संस्थान एक क्रिया-उन्मुख ग्रामीण विकास संस्थान है जो गुजरात राज्य के भरुच और नर्मदा जिलों के 100% आदिवासी क्षेत्रों में 1984 से बिना किसी जाति, धर्म और समुदाय के भेदभाव के कार्यरत है। इनरेका संस्थान का पंजीकरण 4 दिसंबर 1984 को बॉम्बे पब्लिक ट्रस्ट अधिनियम 1950 के तहत पंजीकरण संख्या E - 5 7 6 2 के साथ हुआ था। यह 11 सितंबर 1985 को गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली से वित्तीय सेवा पंजीकरण (FCRA) के तहत पंजीकरण संख्या 041990027 के साथ पंजीकृत है। अब एफसीआरए अधिनियम 2010 के अनुसार एफसीआरए के तहत नवीनीकृत किया गया है पंजीकरण संख्या 041990089 दिनांक 15 फरवरी 2019 को कार्रवाई की गई सीएसआर पंजीकरण संख्या: सीएसआरओ007693 दिनांक 04/04/2021 और 12ए, पंजीकरण संख्या ए ए ए टी आई 3801आर ई 20214 दिनांक 28.05.2021 अपने 37 वर्षों के अस्तित्व के दौरान, आईएनआरईसीए संस्थान ने विभिन्न प्रकार के सामाजिक-आर्थिक कार्य किए हैं/कर रहा है, जिनमें ग्रामीण विकास, कृषि विकास, पशुधन, विकास, महिला एवं बाल विकास, मानव संसाधन, विकास, जलसंभर, विकास, डेयरी एवं कुक्कुट पालन, मधुमक्खी पालन और लघु उद्योग स्थापित करना शामिल हैं। इसका उद्देश्य वंचित वर्ग की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाना है। समाज और सतत विकास

हमारी दृष्टि

इनरेका (अंतर्राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा सांस्कृतिक संघ) में, हमारा दृष्टिकोण शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक-आर्थिक विकास में उत्कृष्टता के अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों को प्राप्त करना है, साथ ही उन वंचित समुदायों की सांस्कृतिक नैतिकता को बनाए रखना है जिनकी हम सेवा करते हैं। हम एक ऐसा परिवर्तनकारी प्रभाव लाने का प्रयास करते हैं जो भरुच और नर्मदा जिलों की ग्रामीण और आदिवासी आबादी की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का सम्मान करता है और उसे एकीकृत करता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि प्रगति सार्थक और सम्मानजनक हो। हमारा लक्ष्य सार्थक परिवर्तन लाना है जो भरुच और नर्मदा जिलों की आदिवासी आबादी के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है, साथ ही उनकी अनूठी विरासत का संरक्षण और जश्न मनाता है।

आपके मस्तिष्क में अपार क्षमता है,
जो सही मार्गदर्शन और प्रेरणा से जागृत होती है।

- गीता

सिद्धांत और मूल्य

समाज के गरीब और वंचित वर्ग की सहायता के प्रति समर्पण। ग्रामीण समुदायों, विशेषकर आदिवासियों, दलितों, हरिजनों, महिलाओं और बच्चों के साथ और उनके लिए काम करना, ताकि उनकी बौद्धिक और शारीरिक क्षमताओं का विकास हो सके। सच्चे ग्राम स्वराज और पंचायती राज की मानवीय अवधारणाओं की प्राप्ति के लिए काम करना और यह सुनिश्चित करना कि हाशिए पर रहने वालों को स्वशासन और स्व-शासन की प्रक्रिया में भाग लेने के अवसर मिलें। गाँव स्तर पर सच्ची मुक्ति के लिए वातावरण बनाना और उसे बढ़ावा देना, ताकि समाज के कमजोर वर्गों का आत्म-साक्षात्कार हो सके। सादगी, संयम और समाज के पिछड़े वर्ग के उत्थान के प्रति समर्पण का जीवन जीना। सामाजिक सद्भाव और विभिन्न संस्कृतियों, विरासत, धर्मों और रीति-रिवाजों के प्रति सम्मान को बढ़ावा देना।

लक्ष्य एवं तर्क

प्राकृतिक संसाधनों के सतत विकास और उपयोग के लिए काम करना और भविष्य की पीढ़ियों के लिए जैव विविधता और पर्यावरण का संरक्षण करना। समाज के गरीब वर्गों को लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से

आर्थिक हस्तक्षेपों के माध्यम से जीवन की गुणवत्ता और जीवन स्तर में स्थायी सुधार के लिए काम करना। ग्रामीण और शहरी विकास के लिए परियोजनाओं और कार्यक्रमों की शुरुआत और कार्यान्वयन करना, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, जल संसाधन, संरक्षण, सतत कृषि और पशुपालन, नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों और प्रौद्योगिकियों का दोहन और विकास, कुटीर उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण और संरक्षण, आवास, वानिकी, मत्स्य पालन आदि पर विशेष ध्यान दिया जाए। विकास में प्राथमिक हितधारक के रूप में संसाधनों की योजना, कार्यान्वयन और प्रबंधन में सहभागितापूर्ण प्रक्रियाओं के माध्यम से हाशिए पर स्थित समुदायों की भागीदारी को बढ़ावा देना। वंचित समुदायों को संगठित करना और स्थानीय समूह जैसे महिला मंडल, संघ, ऋण एवं बचत समितियाँ, सहकारी समितियाँ आदि का गठन करना, ताकि लोगों को सशक्त बनाया जा सके और उनके विकास के लिए निर्णय लेने और समूह गतिविधियों का प्रबंधन करने की प्रबंधन क्षमता विकसित की जा सके।

हमारा मिशन

स्वयं को समाज के गरीब और वंचित वर्गों के उत्थान और समर्थन के लिए समर्पित करना है। हम सतत विकास कार्यक्रमों को लागू करने के लिए प्रतिबद्ध हैं जो शिक्षा, स्वास्थ्य आदि क्षेत्रों को संबोधित करते हैं। और इन समुदायों की सामाजिक-आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करना। अपने प्रयासों के माध्यम से, हमारा उद्देश्य विकास और आत्मनिर्भरता के अवसरों को बढ़ावा देना है, साथ ही उन लोगों की सांस्कृतिक परंपराओं और मूल्यों के प्रति गहरा सम्मान बनाए रखना है जिनकी हम सेवा करते हैं। हमारा मिशन सहयोग और लचीलेपन की भावना को बढ़ावा देना है, यह सुनिश्चित करते हुए कि हमारे प्रयास दीर्घकालिक सकारात्मक परिवर्तन लाएं, साथ ही उन लोगों की सांस्कृतिक विरासत का सम्मान और संरक्षण करें जिनकी हम सहायता करते हैं।



संगठन के उद्देश्य

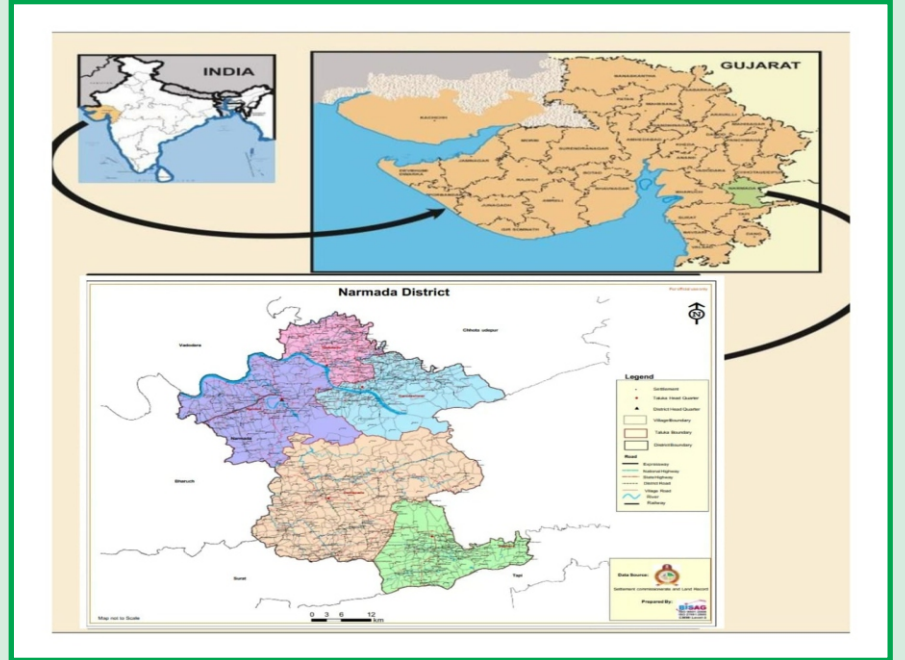
ग्रामीण संपर्क सड़कों का निर्माण और रखरखाव, विद्युतीकरण और जल निकासी। स्कूलों, कॉलेजों, प्रयोगशालाओं, छात्रावासों और पुस्तकालयों की स्थापना और संचालन। औषधालयों, प्रसूति गृहों और बाल कल्याण केंद्रों की स्थापना। समाज के कमजोर वर्ग की सहायता करना और उन्हें अपना घर बनाने में मदद करना। लघु एवं सामुदायिक सिंचाई योजनाओं का विकास। आदिवासियों को उर्वरक, कीटनाशक और पौध उपकरण जैसे कृषि इनपुट की आपूर्ति। रोजगार के अवसर उत्पन्न करना। ग्रामीण उद्योगों और प्रबंधन प्रणालियों का विकास, जिसमें सहकारी समितियों की स्थापना भी शामिल है। हैंडपंपों की स्थापना, खुले कुओं के निर्माण और रखरखाव के माध्यम से पेयजल संसाधनों का विकास। व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना और कार्यशालाओं, सेमिनारों, प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों आदि का संचालन शिक्षा और कौशल विकास के लिए। ग्रामीण विकास से संबंधित सामाजिक और तकनीकी विषयों पर अनुसंधान गतिविधियाँ संचालित करना। सामुदायिक संसाधनों के संगठन और प्रबंधन के लिए सहकारी समितियाँ स्थापित करना, प्रसंस्करण, विपणन आदि के माध्यम से मूल्यवर्धन करना।

भौगोलिक विस्तार

नर्मदा को एक जिला बनाया गया 1997 में चार तालुकाओं के साथ। वर्तमान में नर्मदा के पाँच हैं। तालुका डेडियापाड़ा: सागबारा; नन्दोद; गरुडेश्वर और तिलकवाड़ा। सख्त इनरेका संस्थानरहा है अर्थात् पाँच तालुकाओं में कार्य करना डेडियापाड़ा, सागबारा नंदोद गरुडेश्वर और तिलकवाड़ा के नर्मदा जिला और दो तालुकाभरुच जिले के।

दृष्टि

प्रक्रिया प्रलेखन को एक सामाजिक विज्ञान अनुसंधान पद्धति के रूप में अपनाना, जिससे विचारों का सामूहिकरण हो सके, विभिन्न स्तरों पर सहभागिता संभव हो सके, लोगों की क्षमताओं का निर्माण हो सके और लोग जिम्मेदारियां लेने में सक्षम हो सकें। सामाजिक सद्भाव और विभिन्न संस्कृतियों, विरासत, धर्मों और रीति-रिवाजों के प्रति सम्मान को बढ़ावा देना।



इनरेका नर्मदा जिले के पाँच तालिकाओं अर्थात् देडियापाड़ा, सागबारा नंदोद गरुडेश्वर और तिलकवाड़ा और भरुच जिले के दो तालिकाओं में काम कर रहा है।

स्वच्छता

ग्रामीण विकास विभाग, भारत सरकार द्वारा 2 अक्टूबर 2014 को शुरू किया गया स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य महात्मा गांधी की 150वीं जयंती, 2 अक्टूबर 2019 तक खुले में शौच को समाप्त करना है। इनरेका संस्थान ने अपनी स्थापना के बाद से ही विभिन्न योजनाओं जैसे केंद्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम (सीआरएसपी); समग्र स्वच्छता अभियान (टीएससी) और अन्य के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन योजनाओं के तहत, इनरेका ने नर्मदा जिले के देदियापाड़ा और सागबारा ब्लॉक, भरुच जिले के अंकलेश्वर ब्लॉक, गुजरात के जामनगर जिले के ध्रोल ब्लॉक और दादरा एवं नगर हवेली (केंद्र शासित प्रदेश) में कम लागत वाले शौचालयों का निर्माण किया है। यह ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम 1987 में शुरू किया गया था और अब तक व्यक्तिगत घरों में लगभग 10,000 कम लागत वाले शौचालय बनाए जा चुके हैं।

सामाजिक वानिकी और

वनरोपण कार्यक्रम इनरेका

इनरेका संस्थान 1985 से सामाजिक वानिकी और वृक्षारोपण कार्यक्रम में शामिल है। यह कार्यक्रम सामूहिक नर्सरियों, किसानों की नर्सरियों, संस्थागत नर्सरियों और विकेंद्रीकृत जन नर्सरियों को बढ़ावा देकर बंजर भूमि और निम्नीकृत भूमि पर वृक्षारोपण को प्रोत्साहित करता है।

वन भूमि के साथ-साथ किसानों के स्वामित्व वाली कृषि भूमि में मेड़ों पर वृक्षारोपण किया गया। मेड़बंदी वृक्षारोपण कार्य 20 गांवों में 300 हेक्टेयर भूमि को कवर करते हुए किया गया और लगभग 5000 पौधे बांधों के किनारों पर लगाए गए। इनरेका के परिचालन क्षेत्रों में। संस्थान सामुदायिक सिंचाई सहकारी समिति (इनरेका) वन विभाग से पौधे ला रही है और इनरेका के पास स्थित परिसर में उन्हें लगा रही है। संस्थान को नर्मदा जिले में व्यक्तिगत स्वच्छता इकाइयों के निर्माण के लिए जिला नोडल एजेंसी के रूप में नियुक्त किया गया था। ग्रामीण विकास विभाग, गुजरात सरकार द्वारा। गुजरात राज्य जल आपूर्ति एवं सीवेज बोर्ड, गांधीनगर ने सरकारी प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में ब्लॉक शौचालय परिसर के निर्माण का कार्य भी सौंपा है। नर्मदा जिले में स्थित इनरेका ने छात्रों के लिए 5 ब्लॉक शौचालय और डेडियापाड़ा बस स्टैंड पर एक भुगतान-उपयोग ब्लॉक का निर्माण किया है। इसके अलावा, इंदिरा आवास योजना (IAY) और सरदार आवास योजना (SAY) के तहत लगभग 1000 कम लागत वाले घरों में शौचालय बनाए गए हैं।

देदियापाड़ा की 20 पुनर्वास कॉलोनियों में लगभग 500 घरों का निर्माण किया गया है। नर्मदा बांध के विस्थापितों को नर्मदा सोसाइटी लिमिटेड के सहयोग से बसाया गया है। इसके परिणामस्वरूप, देदियापाड़ा ब्लॉक में 2000 से अधिक पौधे लगाए गए हैं, जबकि जामनगर जिले के ध्रोल ब्लॉक के 22 गांवों में लगभग 2500 पौधे लगाए गए हैं। आईएनआरईसीए संस्थान को देदियापाड़ा ब्लॉक के आदिवासी गांवों के आसपास की खराब वन भूमि पर सामाजिक वानिकी और वृक्षारोपण कार्यक्रम की मंजूरी मिली है। जलसंभर विकास कार्यक्रम के तहत, आईएनआरईसीए ने 3 गांवों में नर्सरी स्थापित कीं और वृक्षारोपण कार्य किया। इन गांवों में इस परियोजना के तहत लगभग 10 लाख पौधे लगाए गए। धन की अनुपलब्धता, स्कूल भवनों आदि के निर्माण के कारण वृक्षारोपण गतिविधियां बंद होने के बावजूद, वनीकरण कार्य रुक गया है।

आप ईश्वर में तब तक विश्वास नहीं कर सकते जब तक आप स्वयं में विश्वास नहीं करते।

- स्वामी विवेकानंद

कृषि

कृषि उत्पादन में बहु-विषयक कार्रवाई (एमएएपी) एक पायलट योजना थी जिसे 2016-17 में शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य आदिवासी समुदाय के छोटे और सीमांत किसानों को सिंचाई सुविधाएँ प्रदान करना था। गहरे बोरवेल खोदने, विद्युतीकरण, जलमग्न मोटर और पाइपलाइन लगाने के माध्यम से यह सुविधा प्रदान की गई। ताकि सिंचाई योजना की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। इसके अलावा, कुछ अन्य संबंधित गतिविधियाँ जैसे बीज किट, उर्वरक, कीटनाशक, कृषि उपकरण आदि सब्सिडी के आधार पर उपलब्ध कराना और साथ ही साथ क्षेत्र सेवाएँ प्रदान करना भी परिकल्पित किया गया था। ताकि सभी सेवाएँ एक ही स्थान पर उपलब्ध हो सकें।

भूमि विकास गतिविधियाँ

एनआरईसीए संस्थान स्थानीय स्थलाकृतिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए भूमि विकास गतिविधियों में संलग्न है। इसमें भूमि समतलीकरण कार्य; कंटूर बंडिंग; सीढ़ीदार खेत बनाना; वृक्षारोपण शामिल हैं।

चेक डैम का निर्माण

इनरेका संस्थान लगभग 25 गांवों में छोटी नदियों पर छोटे चेक बांधों के निर्माण में शामिल है।

विभिन्न उद्देश्यों के साथ जैसे लघु सिंचाई; जल संरक्षण; मृदा संरक्षण; जल पुनर्भरण

बायोगैस संयंत्रों का निर्माण

ने भरुच जिले के देदियापाड़ा ब्लॉक में लगभग 200 बायोगैस संयंत्र स्थापित किए हैं। इस कार्यक्रम को शुरू करने का मुख्य कारण नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देना और बायोगैस अपशिष्ट का जैविक खाद के रूप में उपयोग करना, आदिवासी क्षेत्रों में उपलब्ध गोबर का अधिकतम उपयोग करना और लकड़ी के उपयोग से होने वाली वनों की कटाई को कम करना था, जिससे पर्यावरण को बढ़ावा मिले। इनरेका संस्थान ने इस योजना को बड़े पैमाने पर व्यक्तिगत रूप देने का प्रयास किया और पिछले वर्ष और चालू वर्ष में भी देदियापाड़ा ब्लॉक के 10 गांवों में 250 एकड़ भूमि की सिंचाई करके जबरदस्त सफलता प्राप्त की। IMAAP के तहत संपत्तियों को पंजीकृत सहकारी समिति इनरेका संस्थान, सामुदायिक सिंचाई सहकारी समिति लिमिटेड) को हस्तांतरित कर दिया गया है। यह सहकारी समिति अपने लाभार्थियों को सिंचाई का पानी, पर्यवेक्षण आदि प्रदान करके सेवाएं देना जारी रखती है।

उत्पादों का विपणन, बीजों, उर्वरकों, कीटनाशकों और कृषि उपकरणों की रियायती दरों पर आपूर्ति। वर्षा जल को अवशोषित करने और उपजाऊ ऊपरी मिट्टी के कटाव को रोकने के साथ-साथ बंजर भूमि के भूजल के अधिकतम उपयोग के लिए कार्य किया गया है। स्थानीय लोग इस पानी का उपयोग धोने, नहाने और पीने के साथ-साथ पशुओं की प्यास बुझाने के लिए भी करते हैं। इसके अतिरिक्त, खाना पकाने के क्षेत्र में धुएँ में कमी, बर्तनों पर कालिख के जमाव में कमी और सुविधा में वृद्धि के कारण स्वास्थ्य पर पड़ने वाले सामाजिक प्रभावों ने भी इनरेका को इस गतिविधि को शुरू करने के लिए प्रेरित किया।



पर्यावरण, योग, प्रतियोगिता प्रभाग



Gallery M12
14 August 2024 10:51 am

प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य

परियोजना

इनरेका को नर्मदा जिले के लिए जिला मातृ गैर सरकारी संगठन के रूप में चुना गया था। यह संगठन 2004 से 2018 तक पूरे नर्मदा जिले में अन्य क्षेत्रीय गैर सरकारी संगठनों के सहयोग से सभी 4 तालुकों (अब 5 तालुकों) में प्रजनन, स्वास्थ्य और स्वास्थ्य (आरसीएच) गतिविधियों को संचालित करता रहा। इस अवधि के दौरान, निम्नलिखित आरसीएच उद्देश्यों और संकेतकों के आधार पर कार्य किया गया।

नियमित टीकाकरण कार्यक्रम

यूनिसेफ ने इनरेका संस्थान को नर्मदा जिले के लिए संयुक्त राष्ट्र विकास परियोजना (UNPP) के रूप में 2014-2015 से मान्यता दी है। निम्नलिखित उपलब्धियों को UNPP के रूप में मान्यता दी गई है।



आरसीएच संकेतक	2016-17	2017-18
प्रारंभिक पंजीकरण/कुल पंजीकरण	78.80	80.9%
एएनसी 3-4 जांच/कुल पंजीकरण	65.02	69.01%
संस्थागत प्रसव/कुल प्रसव	78.04	80.06%
घरेलू प्रसव	21.06	18.03%
प्रसवोत्तर जांच 3/कुल प्रसव	67.09	70.18%
पहले दिन स्तनपान/जीवित जन्म	88.90	90.01%
पूर्ण टीकाकरण/जीवित जन्म	86.7	89.04%
जेएसवाई लाभ/संस्थागत प्रसव	65.35	79.01%
सीजेवाई लाभ/संस्थागत प्रसव	61.78	65.89%
108 का उपयोग/संस्थागत प्रसव	74.71	82.05%

उम्मीद के मुताबिक नतीजे	हासिल किए गए परिणाम
नवंबर 2016 से जुलाई 2018	
इंटरवेंशन एरिया में 2 साल से कम उम्र के बच्चों वाली 90% गांवों की पहचान की गई और उन्हें इससे जोड़ा गया।	इंटरवेंशन क्षेत्र में 2 साल से कम उम्र के बच्चों वाली 95.72% माताओं की पहचान की गई और उनसे संपर्क साधा गया। कुल 1215 बच्चों में से - 1163 बच्चे जो पहले से ही RI (नियमित टीकाकरण) के लिए नियमित थे, उनकी पहचान की गई + 89 जो छूट गए थे, वे नियमित हो गए + 87 जो बीच में ही छोड़ गए थे, उन्हें फिर से नियमित किया गया + Gray1 34 + Gray2 - 35 + माइग्रेशन 29
कम से कम 90% प्रोजेक्ट गांवों में मदर्स मीट की गई।	प्रोजेक्ट के कम से कम 90% गांवों में माताओं की बैठकें आयोजित की गईं।
2 साल से कम उम्र के बच्चों की 70% मांएं/देखभाल करने वाली जो FIC शेड्यूल को पूरा कर सकती हैं (20% बढ़ोतरी)।	2 साल से कम उम्र के शिशुओं की 88.97% माताएं/देखभाल करने वाले FIC (पूर्ण टीकाकरण) शेड्यूल को बता सकते हैं (20% की वृद्धि)। कुल 1215 बच्चों में से - 919 नियमित बच्चों की पहचान की गई + 75 जो छूट गए थे + 87 जो बीच में ही छोड़ गए थे, अब पूरी तरह से प्रतिरक्षित (immunized) हैं = 1081
2 साल से कम उम्र के बच्चों वाली 85% मांएं ममता कार्ड रखती हैं और शेड्यूल का पालन करती हैं (15% बढ़ोतरी)।	2 साल से कम उम्र के बच्चों वाली 86.58% माताएं ममता कार्ड रखती हैं और शेड्यूल का पालन करती हैं (15% की वृद्धि)। 1052 बच्चों में से 919 बच्चों के पास पहले से ही ममता कार्ड हैं + 46 जो छूट गए थे, उन्होंने ममता कार्ड बनवा लिए हैं + 87 जो बीच में ही छोड़ गए थे, उनके पास भी ममता कार्ड हैं।
RI पर ध्यान देने वाले 80% गांवों के कम्युनिटी बेस्ड इन्फ्लुएंसर की संख्या।	91.14% गांवों में समुदाय-आधारित प्रभावशाली लोगों को RI के बारे में जानकारी दी गई (350 PRIS, भगत, भुवा और वन समितियों की पहचान की गई, जिनमें से कुल 319 ने भाग लिया)।
90% LWs, BCS और VVs ट्रेड हैं और RI शेड्यूल को पूरा कर सकते हैं, IPC के ज़रूरी SBCC स्किल्स दिखा सकते हैं।	80% LWs (महिला कार्यकर्ता), BCS (ग्राम स्वास्थ्य कार्यकर्ता) और VVs (स्वयंसेवक) को प्रशिक्षित किया गया है; वे RI शेड्यूल बता सकते हैं और IPC (व्यक्तिगत परामर्श) के लिए आवश्यक SBCC (व्यवहार परिवर्तन संचार) कौशल का प्रदर्शन कर सकते हैं।
70% प्रेगेंट महिलाओं को लाया जाएगा और उनकी सुरक्षित डिलीवरी और नए बच्चे के लिए PNC तक कम से कम चार बार उनका चेकअप कराया जाएगा।	67.53% गर्भवती महिलाओं को लाया गया और उनकी सुरक्षित प्रसव तक कम से कम चार बार जांच करवाई गई, साथ ही उनके नवजात शिशु के लिए PNC (प्रसवोत्तर देखभाल) भी सुनिश्चित की गई।

नर्मदा अस्पताल एवं अनुसंधान केंद्र (NHSRC) (10 या अधिक बिस्तरों वाला अस्पताल)

इनरेका संस्थान पिछले 21 वर्षों से स्वास्थ्य जागरूकता और SBCC गतिविधियों में लगा हुआ है। पिछले 3 वर्षों में, हमने अपने मौजूदा परिसर में कुछ बिस्तरों वाला एक OPD अस्पताल शुरू करने का विचार किया, ताकि स्थानीय आदिवासी समुदाय को स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान की जा सकें। वास्तव में, माँग बहुत अधिक है, लेकिन वित्तीय बाधाओं के कारण सेवाएँ ठीक से प्रदान करने में हमें कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इसलिए, हमने जनजातीय कार्य मंत्रालय, नई दिल्ली से GIA योजना के तहत संपर्क करने का निर्णय लिया। जनजातीय कार्य मंत्रालय, नई दिल्ली ने '10 या अधिक बिस्तरों वाले अस्पताल योजना' के तहत हमारे अनुरोध पर विधिवत विचार किया है। हमारी भविष्य की योजना किसी राष्ट्रीयकृत बैंक से ऋण लेकर अस्पताल का पूर्ण रूप से विस्तार करना और एक 'सुपर स्पेशलिटी अस्पताल' (सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल) विकसित करना है, जिसका नाम 'नर्मदा अस्पताल और अनुसंधान केंद्र' (NHRC) होगा, ताकि दूरदराज और आदिवासी क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सुविधाएँ प्रदान की जा सकें। स्त्री रोग (Gynaec), बाल रोग (Pediatric), सामान्य सर्जरी, हड्डी रोग (Orthopedic) विभाग और अन्य सुविधाएँ शुरू की जाएँगी। इसके साथ ही, वर्ष 2022-23 के अंत तक हमारी लैब, X-ray, OT और फार्मासिस्ट की सुविधाएँ भी उपलब्ध हो जाएँगी। COVID-19 महामारी के दौरान, हमने निर्धारित प्रोटोकॉल का पालन करते हुए, दादियापाड़ा और सागबारा ब्लॉक की सीमाओं से आने वाले मरीजों की देखभाल और चिकित्सा सेवाएँ जारी रखीं। वर्ष 2024-25 के दौरान कुल 18,346 मरीजों का इलाज, निदान और परामर्श किया गया। इसका विवरण नीचे दिया गया है:

वर्ष 2023-24 के दौरान				वर्ष 2023-24 के दौरान	
क्रम संख्या	महीने	O.P.D. मरीजों की संख्या जिन्हें लाभ मिला	I.P.D. मरीजों की संख्या जिन्हें लाभ मिला	O.P.D. मरीजों की संख्या जिन्हें लाभ मिला	I.P.D. मरीजों की संख्या जिन्हें लाभ मिला
1	अप्रैल	1203	229	1105	355
2	मई	1171	277	1098	342
3	जून	1151	289	1071	314
4	जुलाई	1451	404	1239	327
5	अगस्त	1436	355	1298	348
6	सितंबर	1495	370	1214	314
7	अक्टूबर	1287	324	1301	308
8	नवंबर	1018	223	1079	299
9	दिसंबर	1134	280	1220	335
10	जनवरी	1232	305	1305	309
11	फरवरी	1061	269	1155	290
12	मार्च	1091	291	1110	294
	कुल	14730	3616	14409	3835

दिनांक 01.04.2024 से 31.03.2025

अस्पताल



A society that values health builds lasting happiness.



When health is cared for, hope and progress naturally follow.

वंदना नर्सिंग एवं पैरामेडिकल कॉलेज

वंदना नर्सिंग एवं पैरामेडिकल कॉलेज

नर्मदा घाटी में पिछले लगभग चार दशकों से आदिवासी समुदाय के साथ काम करते हुए, हम इस दृढ़ विश्वास पर पहुंचे हैं कि आदिवासी लड़कियां अधिक मजबूत, कर्मठ और ईमानदार होती हैं यदि उन्हें व्यावसायिक प्रशिक्षण या प्रशिक्षण के अवसर प्रदान किए जाएं। इसलिए निस्संदेह, आर्थिक परिदृश्य में सुधार होगा। इनके संस्थान ने इस दूरस्थ आदिवासी क्षेत्र में नर्सिंग कॉलेज चलाने का निर्णय लिया ताकि आदिवासी छात्राएं स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षण प्राप्त कर सकें और विशेषकर लड़कियां आत्मनिर्भर बन सकें। इसलिए, इनके संस्थान ने लगभग 45000 वर्ग फुट का भवन निर्मित किया और पिछले शैक्षणिक वर्ष 2024-25 में एएनएम/जीएनएम पाठ्यक्रम शुरू किए गए, जिनकी अवधि क्रमशः 2 वर्ष और 3 वर्ष है। गुजरात सरकार ने शुरू में प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए 40 सीटें आवंटित की हैं। हमारे जिला प्रशासन के संज्ञान में भी आया है कि हमारी आदिवासी लड़कियों का आर्थिक और अन्य तरीकों से शोषण किया जाता है जब वे राज्य से बाहर जाकर पाठ्यक्रम करने का विकल्प चुनती हैं। ऐसी घटनाओं और दुर्व्यवहार से बचने के लिए, इन पाठ्यक्रमों को तुरंत शुरू करना आवश्यक हो गया है और उम्मीद है कि बीएससी (नर्सिंग), पीबी बीएससी (नर्सिंग) भी अगले कुछ वर्षों में शुरू हो जाएगा।



वंदना डायग्नोस्टिक सेंटर



ऋण और

मितव्ययिता गतिविधि

इनरेका संस्थान आदिवासी लाभार्थियों के लिए सूक्ष्म ऋण वित्तपोषण में संलग्न है और विभिन्न सहकारी समितियों के माध्यम से उन्हें ऋण तक पहुंच प्रदान करता है। 1985 से लाभार्थियों को 40 लाख रुपये तक के ऋण उपलब्ध कराए गए हैं। वर्ष 2017-18 में वितरित ऋण की राशि 20 लाख रुपये थी। ये ऋण राष्ट्रीय और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों के साथ-साथ इनरेका के स्वयं के कोष से भी प्रदान किए जाते हैं। ऋणों की वसूली 100% रही है। वर्तमान में इनरेका संस्थान देदियापाड़ा ब्लॉक के 65 गांवों में लगभग 80 स्वयं सहायता समूहों और सागबारा ब्लॉक के 30 गांवों में 30 स्वयं सहायता समूहों से संबद्ध है। कुल सदस्यता 2000 है। दादरा और नगर हवेली (केंद्र शासित प्रदेश) में भी कुछ समूह गठित किए जा रहे हैं।

स्वयं सहायता समूहों के उद्देश्य:

- महिलाओं में भविष्य के लिए बचत करने के प्रति जागरूकता पैदा करना।
- उन्हें अनिवार्य बचत की आदत डालने के लिए
- समूहों की बचत को स्वयं के रूप में व्यवस्थित करना
- समूह के जरूरतमंद सदस्यों को ऋण प्रदान करना
- ऋण की वापसी सुनिश्चित करने के लिए
- आपसी समझ और जिम्मेदारी को लागू करने के लिए ताकि वे स्वयं को ऊपर उठा सकें।

इनरेका गुजरात सरकार द्वारा शुरू की गई मिशन मंगलम परियोजना के साथ काम कर रही है, जिसका मुख्य उद्देश्य स्वयं सहायता समूहों (SHGs) को एक उपकरण के रूप में उपयोग करके आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देना है। ये समूह सूक्ष्म वित्त पद्धति के तहत ऋण और बचत में लगे हुए हैं। नर्मदा जिले के देदियापाड़ा और सागबारा ब्लॉकों में SGSY के तहत 25 से अधिक समूह गठित किए गए हैं। गोकुल ग्राम योजना के तहत नर्मदा जिले के कुल 698 गांवों में से 15 गांवों को SGSY के अंतर्गत शामिल किया जाना है, ताकि उन्हें व्यक्तिगत या सामूहिक गतिविधियों के लिए वित्त प्रदान किया जा सके और उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार किया जा सके।

जागरूकता सृजन कार्यक्रम

महिलाओं के लिए

केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड ने महिलाओं, विशेष रूप से अनुसूचित जाति और जनजातियों की महिलाओं को उनके अधिकारों के बारे में जागरूक करने के लिए एक महत्वाकांक्षी योजना शुरू की है। दूसरा, पंचायती राज, जो आज का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसमें शक्ति के विकेंद्रीकरण पर सबसे अधिक जोर दिया गया है, विशेष रूप से महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए, जिनमें लगभग 50% महिलाएं शामिल हैं। तीसरा, पोलियो, खसरा, टीकाकरण, मासिक धर्म स्वास्थ्य आदि के क्षेत्र में अधिकतम लाभ और परिणाम प्राप्त होने चाहिए।

स्वच्छता, कम उम्र में विवाह का त्याग, आदि, और यह तभी संभव है जब महिलाएं इन परोपकारी योजनाओं के बारे में जागरूक हों।



आरोग्यम् खलु जीवनम् - स्वास्थ्य ही जीवन है

परिचय

इनरेका संस्थान ने गुजरात सरकार के कुटीर ग्रामीण उद्योग निदेशालय के तत्वावधान में गुजरात मटिकमकलाकारी और ग्रामीण प्रौद्योगिकी संस्थान के सहयोग से 2006 से इनरेका परिसर में एक आवासीय प्रशिक्षण केंद्र शुरू किया है। इनरेका नियमित रूप से प्रतिवर्ष 4 से 5 बैचों के लिए आवासीय एक्रिलिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है, जिसमें राज्य भर से प्रशिक्षु आते हैं। उपरोक्त TRYSEM और DWCRA प्रशिक्षण DRDA, TSP जैसे विभिन्न विभागों के माध्यम से आयोजित किए जाते हैं।



प्रशिक्षण

इनरेका संस्था रोजगार सुनिश्चित करने के लिए प्रतिवर्ष विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करती है। इनमें से कुछ प्रशिक्षण कार्यक्रम हैं: सिलाई और कटाई; कढ़ाई; बढईगिरी; राजमिस्ती का काम; हीरा काटना और पॉलिश करना; कालीन बुनाई; हैंडपंप मरम्मत; पत्तों से कप-प्लेट बनाना आदि।

पिछले तीन वर्षों से, नर्मदा जिले के चार ब्लॉकों में किसानों की कृषि उपज बढ़ाने के लिए कृषि एवं गैर-कृषि क्षेत्रों में कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जा रहे हैं। कृषि क्षेत्र के प्रशिक्षणों में डेयरी और बकरी पालन शामिल हैं, जिनके विविध उद्देश्य हैं जैसे पोषक तत्व प्रबंधन, चारा प्रबंधन प्रशिक्षण, रोग प्रबंधन, नई सहकारी समितियां शुरू करना, चारा प्रबंधन प्रशिक्षण, रोग प्रबंधन, पोषक तत्व प्रबंधन, पालन-पोषण पद्धतियां आदि। साथ ही, अगरबत्ती बनाना, आभूषण बनाना और साबुन बनाना जैसे कृषि संबंधी प्रशिक्षण भी दिए जाते हैं।

क्रमांक	प्रशिक्षण का तरीका	2024-25	1984-2024
1.	केवीआईसी, आरटीआई, डीआरडीए, टीएसपी, ट्राईसेम और डीडब्ल्यूसीआरए आदि के माध्यम से विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं	-	6059
2.	कृषि क्षेत्र में प्रशिक्षण, जैसे कि किर्क, गोगार्टी आदि।	1810	2662
3.	गैर-कृषि क्षेत्र के प्रशिक्षण जैसे कि हस्तशिल्प,	74	-
	कुल	2014	8721

સિકલ સેલ શિક્ષા કાર્યક્રમ



રોહદા ગામે સિકલસેલ એનિમિયા નિર્મૂલન યોજના અંતર્ગત અવેરનેસ કાર્યક્રમ યોજાયો

દેડિયાપાડા : દેડિયાપાડાના ટીબ્બાપાડા ગામે આવેલી ઈન-રેક સંસ્થાના વડા ડૉ. વિનોદ કુમાર કોલિક અને મેનેજર ગોપાલ સિકલ શાયિયા માર્ગદર્શન હેઠળ દેડિયાપાડા તાલુકાના રોહદા ગામમાં સિકલસેલ એનિમિયા નિર્મૂલન યોજના અંતર્ગત અવરનેસ કાર્યક્રમ કરવામાં આવ્યો હતો. જેમાં લોકોએ ઉલ્લાસભર ભાગ લીધો હતો અને આદિવાસી સમાજમાં સિકલસેલ એનિમિયા વિશે લોકો-મુખ વાર્તાલાપ કરવામાં આવ્યો હતો.

સિકલસેલના દર્દીઓ શારીરિક- માનસિક અને આર્થિક રીતે પાયામાલ બને છે તેમજ તેમની આવનારી પેઢી પણ જે સિકલસેલ ગણિત હોય તો કેટલીય યાનતાઓ ભોગવવી પડે છે તે તરફ ડેડિયા સૂચન કરી સિકલસેલને નિર્મૂલન કરવાની ચર્ચા કરવામાં આવી હતી. આપણા આદિવાસી સમાજને સિકલસેલ રોગ ઊપલ્લ જેમ અંદરથી કોરી કરી રહ્યો છે તેમજ સિકલ સેલ એનિમિયા રોગ વિશે સામાન્ય લોકોમાં જે સમજ ઊભી થઈ છે તેના વિપરીત સિકલસેલ એનિમિયાને લોકોએ હવે ગંભીર દ્રષ્ટિકોણથી જાવો રહ્યો.

सनातन धर्म बाल संस्कार केंद्र

इनरेका संस्थान औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा दोनों पर अधिकतम जोर दे रहा है ताकि आदिवासी समुदाय को सक्रिय किया जा सके, जो कि हाशिए पर है। इनरेका संस्थान ने इस केंद्र की शुरुआत की है आदिवासी छात्रों को नर्सरी और किंडरगार्टन में पढ़ाने के लिए।

सनातन धर्म शिशु शिक्षा सदन

इनरेका संस्थान ने सरकारी मान्यता प्राप्त विद्यालय स्थापित किया है, जिसका नाम है सनातन धर्म शिशु शिक्षा सदन। शुरुआत में इसकी शुरुआत आठवीं कक्षा तक के बच्चों के साथ की गई थी। इस विद्यालय में लगभग 2001 आदिवासी छात्र पढ़ रहे हैं। इनरेका संस्थान इन दूरस्थ क्षेत्रों में भारतीय संस्कृति, विरासत और अनुशासन के साथ बेहतर शिक्षा प्रदान करने पर जोर दे रहा है।

अपनी नियति को अपूर्ण रूप से जीना बेहतर है किसी और के जीवन की नकल को पूर्णता से जीने से।

“युवाओं के मस्तिष्क को शिक्षित करते समय, हमें उनके हृदय को शिक्षित करना नहीं भूलना चाहिए।”
– दलाई लामा

शैक्षणिक वर्ष: 2023-24			
कक्षा	कुल छात्र	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण%
जेकेजी	20	20	100
एसकेजी	18	18	100
1	22	22	100
2	28	28	100
3	33	33	100
4	35	35	100
5	38	38	100
6	40	40	100
7	38	38	100
8	42	42	100
कुल छात्र	314	187	100

शैक्षणिक वर्ष: 2024-25			
कक्षा	कुल छात्र	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण%
जेकेजी	15	15	100
एसकेजी	20	20	100
1	11	11	100
2	01	01	100
3	23	23	100
4	17	17	100
5	18	18	100
6	60	60	100
7	40	40	100
8	57	57	100
Total	262	262	100

सनातन धर्म सीनियर सेकेंडरी स्कूल

एस. डी. सीनियर सेकेंडरी स्कूल की स्थापना 1996 में हुई थी। शुरुआत में स्कूल 8वीं कक्षा तक था, और उसके बाद धीरे-धीरे उच्च माध्यमिक कक्षाएँ जोड़ी गईं। 9वीं, 10वीं और 11वीं कक्षा में लगभग 124 आदिवासी छात्र हैं। लेकिन अगले वर्ष तक एस. डी. स्कूल के छात्रों ने अच्छा प्रदर्शन किया है। इनके संस्थान के पास बच्चों को खेल-खेल में सिखाने के लिए खिलौनों का भंडार है। इनके संस्थान बच्चों के पालन-पोषण और उन्हें भारत के उज्ज्वल भविष्य के योगदानकर्ता बनाने के लिए सर्वोत्तम सेवाएँ प्रदान कर रहा है। साथ ही उनके व्यक्तित्व विकास पर भी ध्यान दिया जा रहा है। निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है। आदिवासी छात्रों के लिए स्कूल से घर आने-जाने के लिए वाहन सेवा भी उपलब्ध है। इस दूरस्थ आदिवासी क्षेत्र में एक नया शैक्षिक वातावरण बनाया गया है। नीचे दी गई तालिकाएँ दो शैक्षणिक वर्षों की हैं: कम समय में न केवल शिक्षा में बल्कि खेलकूद, युवा एवं सांस्कृतिक गतिविधियों जैसी अन्य पाठ्येतर गतिविधियों में भी प्रदर्शन। लगभग 174 आदिवासी छात्र 9वीं से 12वीं कक्षा तक पढ़ते हैं। इसी प्रकार, विद्यालय जल्द ही 12वीं कक्षा के लिए तैयार हो रहा है। नीचे दी गई तालिकाएँ दो शैक्षणिक वर्षों की हैं:

शैक्षणिक वर्ष: 2023-24

कक्षा	कुल छात्र	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण%
9	50	50	100%
10	38	38	
11	40	40	100%
12	47	47	
कुल	175	174	100%

शैक्षणिक वर्ष: 2023-24

कक्षा	कुल छात्र	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण%
9	50	50	100%
10	47	परिणाम की प्रतीक्षा है	
11	57	57	100%
12	39	परिणाम की प्रतीक्षा है	
कुल	193	107	100%

“शिक्षा भविष्य का पासपोर्ट है, क्योंकि कल उन्हीं का है जो आज उसकी तैयारी करते हैं।”

-मैल्कम एक्स

सनातन धर्म आश्रमशाला टिम्बापाड़ा

कुछ दूरस्थ आदिवासी क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ शिक्षा की सुविधाएँ नहीं पहुँची हैं। इनके ने आदिवासी विकास आयुक्त से कक्षा 1 से 7 तक के विद्यार्थियों के लिए आश्रमशाला शुरू करने का अनुरोध किया, जिसे गुजरात सरकार ने स्वीकार कर लिया और 1999-2000 में शुरू किया। अब लगभग 254 आदिवासी विद्यार्थी 10वीं कक्षा तक इस आश्रमशाला का लाभ उठा रहे हैं। उन्हें इस आश्रमशाला में मुफ्त आवास, भोजन और शिक्षा मिल रही है। विद्यार्थियों की संख्या हर साल बढ़ रही है। नीचे दो शैक्षणिक वर्षों की तालिकाएँ दी गई हैं:

शैक्षणिक वर्ष: 2023-24			
कक्षा	कुल छात्र	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण%
1	00	00	100
2	08	08	100
3	11	11	100
4	09	09	100
5	12	12	100
6	18	18	100
7	12	12	100
8	15	15	100
9	46	46	100
10	35	35	100
कुल	166	166	100%

शैक्षणिक वर्ष: 2024-25			
कक्षा	कुल छात्र	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण%
1	17	17	100
2	00	00	100
3	21	21	100
4	23	23	100
5	23	23	100
6	25	25	100
7	30	30	100
8	22	22	100
9	47	47	100
10	38	परिणाम की प्रतीक्षा है	
कुल	246	246	



Galaxy M12



Galaxy M12

सनातन धर्म कन्या छात्रावास (गर्ल्स हॉस्टल)

इनरेका में पहले से ही 12वीं कक्षा तक एस.डी. सीनियर सेकेंडरी स्कूल चल रहा है। इसलिए, उच्च कक्षाओं की छात्राएं, अर्थात 6वीं से 12वीं कक्षा तक, जो पड़ोसी गांवों से आती-जाती हैं, उन्हें बहुत असुविधा होती है। इसलिए, इनरेका ने जनजातीय विकास निदेशालय को बालिका छात्रावास के लिए आवेदन किया था।

गुजरात सरकार ने

शैक्षणिक वर्ष: 2023-24 लाभान्वित छात्र				शैक्षणिक वर्ष: 2024-25 लाभान्वित छात्र			
कक्षा	कुल छात्र	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण%	कक्षा	कुल छात्र	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण%
5	04	04	100	5	03	03	100
6	19	19	100	6	27	27	100
7	12	12	100	7	23	23	100
8	07	07	100	8	14	14	100
9	19	19	100	9	15	15	100
10	23	23	100	10	18	Result Awaited	
11	07	07	100	11	06	06	100
12	12	12	100	12	07	Result Awaited	
कुल	103	103	103	कुल	113	113	

ऋषि वाल्मीकि छात्रावास

आदिवासी बच्चों की बढ़ती संख्या अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहती है, लेकिन ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं। इसी कारण वे अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के लिए ब्लॉक स्तर के शहरों में पलायन करते हैं। इनरेका पहले से ही प्रतिष्ठित प्राथमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय चला रहा है। अत्यधिक मांग के कारण, जनजातीय मामलों के मंत्रालय, नई दिल्ली को एक प्रस्ताव भेजा गया है, जिसमें लड़कियों के लिए अलग-अलग होटल सुविधाओं का अनुरोध किया गया है, जिनमें 100 अनुसूचित जनजाति के लड़के ठहर सकेंगे। शैक्षणिक वर्ष: 2013-24 में 120 छात्राओं को प्रवेश दिया गया। यह प्रस्ताव जनजातीय मामलों के मंत्रालय, नई दिल्ली को भेजा गया है, जिसमें लड़कियों और लड़कों के लिए अलग-अलग होटल सुविधाओं का प्रावधान है, जिनमें 100 अनुसूचित जनजाति के लड़के ठहर सकेंगे।

छात्रों को फायदा हुआ							
शैक्षणिक वर्ष: 2023-24 लाभान्वित छात्र				शैक्षणिक वर्ष: 2024-25 लाभान्वित छात्र			
कक्षा	कुल छात्र	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण%	कक्षा	कुल छात्र	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण%
1	00	00	100	1	07	07	100
2	08	08	100	2	01	01	100
3	08	08	100	3	13	13	100
4	08	08	100	4	14	14	100
5	11	11	100	5	09	09	100
6	09	09	100	6	26	26	100
7	28	28	100	7	11	11	100
8	29	29	100	8	28	28	100
9	10	10	100	9	03	03	100
10	04	04	100	10	07	परिणाम की प्रतीक्षा है	
कुल	115	115	100	कुल	119	119	100

वैदेही कन्या आश्रम, पंगाम

गुजरात सरकार के जनजातीय मामलों के विभाग ने देदियापाड़ा ब्लॉक के पंगम गांव में एक और कन्या आश्रमशाला को मंजूरी दी है। यह आश्रमशाला विशेष रूप से आदिवासी लड़कियों के लिए है, जिनमें कक्षा 1 से 9 तक की शिक्षा प्राप्त की जा सकती है। इसमें लगभग 197 छात्राएं प्रवेश ले चुकी हैं। इस नए आश्रमशाला का नाम "वैदेही कन्या आश्रमशाला" रखा गया है। शौचालय, स्नान और पीने का पानी, आवास जैसी सभी सुविधाएं अस्थायी रूप से विकसित की जा रही हैं। संगठन ने अपने परिसर में एक नया पक्का आवासीय विद्यालय भवन भी बनवाया है।



छात्रों को फायदा हुआ

शैक्षणिक वर्ष: 2023-24 लाभान्वित छात्र				शैक्षणिक वर्ष: 2024-25 लाभान्वित छात्र			
कक्षा	कुल छात्र	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण%	Class	Total Students	Pass	उत्तीर्ण%
1	04	04	100	1	14	14	100
2	15	15	100	2	04	04	100
3	16	16	100	3	18	18	100
4	13	13	100	4	17	17	100
5	29	29	100	5	18	18	100
6	18	18	100	6	37	37	100
7	37	37	100	7	21	21	100
8	27	27	100	8	36	36	100
9	50	50	100	9	38	38	100
10	35	परिणाम की प्रतीक्षा है 100		10	47	परिणाम की प्रतीक्षा है	
कुल	244	244	100	कुल	250	250	100

आप वही हैं जिस पर आप विश्वास करते हैं। आप वही बन जाते हैं जो आप मानते हैं कि आप बन सकते हैं।”

- भगवद गीता

आश्रमशाला स्कूल/छात्रावास/खेलकूद



कार्यकारी सारांश

इनरेका और रिलायंस फाउंडेशन की साझेदारी में कार्यान्वित वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए आजीविका कार्यक्रम का उद्देश्य नर्मदा जिले के ग्रामीण समुदायों की आत्मनिर्भरता और लचीलेपन में सुधार करना था। इस कार्यक्रम के मुख्य हस्तक्षेप जलवायु-अनुकूल कृषि, सतत जल प्रबंधन, महिला उद्यमिता और संस्थागत सुदृढीकरण पर केंद्रित थे। यह रिपोर्ट प्रमुख उपलब्धियों, पहुंच संबंधी आंकड़ों और सरकारी योजनाओं के समन्वय तथा सक्रिय सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से उत्पन्न सकारात्मक प्रभाव का सारांश प्रस्तुत करती है।

आजीविका परियोजना का नाम:- नर्मदा जिले के ग्रामीण समुदायों की आत्मनिर्भरता और लचीलेपन में सुधार साझेदारी परियोजना: रिलायंस फाउंडेशन

विषय:-1 सतत विकास के लिए जलवायु लचीलापन (CR4SD)

जन जागरूकता कार्यक्रम:- ग्राम पंचायत विकास कार्यक्रम (जीपीडीपी) जागरूकता कार्यक्रम: 24 गांवों में आयोजित। ग्राम स्तर पर आयोजित इन सत्रों का उद्देश्य सहभागी योजना प्रक्रिया में समुदायों को व्यापक रूप से शामिल करना था। ग्राम पंचायतों ने योजना के प्रभावी और कुशल कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 702 प्रतिभागियों ने भाग लिया। विश्व पर्यावरण दिवस समारोह: 16 गांवों में मनाया गया। इस कार्यक्रम में 690 पौधे लगाए गए। कुल 453 पुरुषों और महिलाओं ने भाग लिया।

समुदाय के साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण और सहभागितापूर्ण अभ्यास: सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन (पीआरए) अभ्यास 85 गांवों में सामान्य संसाधनों और ग्रामीण मुद्दों की पहचान करने के लिए आयोजित किया गया था। इस प्रक्रिया ने हमें सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से महत्वपूर्ण जानकारी एकत्रित करने में सक्षम बनाया। अभ्यास के भाग के रूप में, दो प्रकार के ग्राम मानचित्र बनाए गए: 1. सामाजिक मानचित्र - गांव की संरचना और सामाजिक बुनियादी ढांचे को समझने के लिए। 2. संसाधन मानचित्र - प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता और उपयोग का आकलन करने के लिए। कुल प्रतिभागी- 1524।

अतिरिक्त जल संचयन क्षमता का सृजन किया गया:- 15 गांवों में जल संचयन संरचनाओं का जीर्णोद्धार: 15 गांवों में, सामुदायिक भागीदारी और ग्राम विकास समिति (वीडीसी) के माध्यम से मौजूदा जल संचयन संरचनाओं की मरम्मत की पहचान की गई। इन संरचनाओं का जीर्णोद्धार किया गया, जिससे 779183 घन मीटर जल का संचयन संभव हो सका।

कुशल जल प्रबंधन तकनीक:- नर्मदा पहाड़ी क्षेत्र है और रबी मौसम में किसानों को पानी की कमी का सामना करना पड़ता है, भूजल का स्तर लगातार घट रहा है। हमारा उद्देश्य समुदायों में कुशल जल प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देना है। हमने वर्षा जल सिंचाई प्रणाली को प्रोत्साहित किया है। यह प्रणाली कृषि में पानी के कुशल उपयोग को बढ़ावा देती है। वर्षा जल सिंचाई प्रणाली को 41 चयनित गांवों में शुरू किया गया है। यह कम लागत वाली और आसानी से स्थापित होने वाली प्रणाली किसानों को अपने खेतों की अधिक प्रभावी ढंग से सिंचाई करने में मदद करती है, विशेषकर सीमित जल उपलब्धता वाले क्षेत्रों में। इस तकनीक के माध्यम से 300 हेक्टेयर भूमि को कवर किया गया है।

मृदा नमी संरक्षण एवं मेड़बंदी पहल:- मिट्टी की नमी का संरक्षण एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो ढलानों की लंबाई कम करने, भूजल पुनर्भरण बढ़ाने और फसल की खेती में सुधार करने में सहायक होती है। मेड़बंदी मिट्टी के कटाव को नियंत्रित करने और किसानों के लिए बेहतर जल संचयन सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। **64 ग्रामवासियों और 311 किसानों ने 351.17 हेक्टेयर भूमि में खेत की मेड़ें विकसित की हैं।** कृषि भूमि का बड़ा हिस्सा कवर किया गया है। यह उपाय मृदा क्षरण को कम करने, जल अंतर्प्रवाह में सुधार करने और कृषि उत्पादकता बढ़ाने में सहायक है। यह पहल टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देती है और जलवायु परिवर्तन के प्रति समुदाय की लचीलेपन को मजबूत करती है।

खेती सिर्फ एक पेशा नहीं, जीवन जीने का एक तरीका है।

सतत समोच्च खाइयाँ (सीसीटी) सतत समोच्च खाइयाँ:- तबदा, मोस्कृत, वधावा और गोपालिया गांवों में कुल 10 हेक्टेयर क्षेत्र में (सीसीटी) लागू की गई हैं। ये खाइयाँ निचले इलाकों में बाढ़ को रोकने, मिट्टी में नमी बनाए रखने की क्षमता बढ़ाने और सतही जल प्रवाह को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह उपाय मृदा संरक्षण में योगदान देता है, भूजल पुनर्भरण को बढ़ाता है और क्षेत्र में टिकाऊ कृषि का समर्थन करता है।

सार्वजनिक क्षेत्र वृक्षारोपण:- कुल 44 गांवों में सार्वजनिक क्षेत्रों में वृक्षारोपण अभियान सफलतापूर्वक संपन्न किए गए हैं। इस पहल में समुदाय की सक्रिय भागीदारी रही, साथ ही ग्राम पंचायतों ने एमएनआरईजीए के माध्यम से भरपूर सहयोग प्रदान किया, जिसने वृक्षारोपण गतिविधियों के लिए श्रम सहायता प्रदान की। इन प्रयासों का उद्देश्य समुदायों को पर्यावरण और मानव कल्याण के लिए वृक्षों के महत्व के प्रति जागरूक करना भी था। पारिस्थितिक संतुलन और स्थानीय जैव विविधता को बढ़ावा देने के लिए बांस, नीम, नीलगिरी यूकेलिप्टस, आम, अमरूद और मोरिंगा जैसी विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाए गए। कुल रोपित पौधे: 1 लाख कुल क्षेत्रफल: 48.9 हेक्टेयर

पेयजल कार्य:- 30 गांवों में पाइपलाइन और पानी की टंकी निर्माण का काम पूरा हो चुका है। इस पहल के तहत, इनरेका ने पेयजल अवसंरचना में मौजूदा कमियों की पहचान करने के लिए ग्राम-स्तरीय मानचित्रण किया। इस आकलन से कुछ गंभीर मुद्दे सामने आए:



जलवायु अनुकूल कृषि: मृदा नमूना संग्रह एवं विश्लेषण:- 71 गांवों से मृदा नमूने एकत्र किए गए, जिनमें 1,117 किसान शामिल थे। इस पहल का प्राथमिक उद्देश्य था: 1. किसानों को उचित मृदा नमूनाकरण तकनीकों के बारे में शिक्षित करना ताकि सटीक परिणाम सुनिश्चित हो सकें। 2. किसानों को उनकी भूमि में पोषक तत्वों की उपलब्धता को समझने और उचित मृदा प्रबंधन पद्धतियों को अपनाने में सहायता करना। 3. एकत्र किए गए मृदा नमूनों को परीक्षण के लिए हमारी सहयोगी एजेंसी, आईएफएफसीओ गांधीनगर भेजा गया। विश्लेषण नि:शुल्क किया गया, जिससे किसानों को मृदा स्वास्थ्य में सुधार और उर्वरक उपयोग को अनुकूलित करने के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्राप्त हुई। यह पहल वैज्ञानिक मृदा प्रबंधन को बढ़ावा देकर और संतुलित पोषक तत्वों के उपयोग को प्रोत्साहित करके सतत कृषि का समर्थन करती है।

उद्देश्य

जलवायु परिवर्तन के अनुकूल कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने के लिए किसानों को जैविक इनपुट, हरित प्रौद्योगिकियों और प्रदर्शनों के माध्यम से सहायता प्रदान करना, जिससे मृदा स्वास्थ्य में सुधार हो, रासायनिक निर्भरता कम हो और सतत आय सृजन में वृद्धि हो।

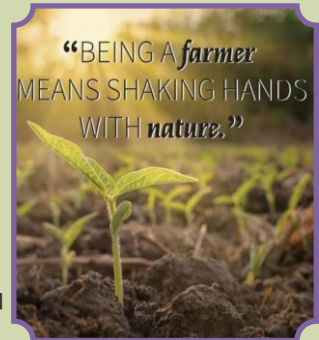
सतत समोच्च खाइयाँ (सीसीटी) सतत समोच्च खाइयाँ :- तबदा, मोस्कृत, वधावा और गोपालिया गांवों में कुल 10 हेक्टेयर क्षेत्र में (सीसीटी) लागू की गई हैं। ये खाइयाँ निचले इलाकों में बाढ़ को रोकने, मिट्टी में नमी बनाए रखने की क्षमता बढ़ाने और सतही जल प्रवाह को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह उपाय मृदा संरक्षण में योगदान देता है, भूजल पुनर्भरण को बढ़ाता है और क्षेत्र में टिकाऊ कृषि का समर्थन करता है।

हस्तक्षेपों का सारांश

क्रम	हस्तक्षेप	गांव	किसान	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)
1	एज़ोटोबैक्टर प्रदर्शन	22	342	136.8
2	अपघटक प्रदर्शन	31	481	192.4
3	माइक्रोशॉट और माइक्रोन्यूट्रिएंट	6	125	50
4	ट्राइकोडर्मा (बीज उपचार)	57	1112	444.8
5	पीएसबी (फॉस्फेट घुलनशील जीवाणु)	38	714	285
6	बायोगैस यूनिट (बायो गैस्टर)	3	4	7
7	नीम के तेल का प्रदर्शन	24	261	104.4
8	सागरिका तरल	7	128	51.2
9	सोलर लाइट स्थापना	38	156	62
10	स्टिकी ट्रीप प्रदर्शन	18	373	149
11	बाग विकास	28	218	87
12	जाल फसल	8	11	44
	कुल	280	3925	1613.6

मुख्य बिंदु और परिणाम

- किसानों को कम लागत वाले, पर्यावरण के अनुकूल कृषि इनपुट से परिचित कराया गया।
- रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग में कमी आई।
- मिट्टी की उर्वरता और फसल उत्पादकता में वृद्धि हुई।
- विकेंद्रीकृत नवीकरणीय ऊर्जा (सौर प्रकाश व्यवस्था, बायोगैस) को अपनाया गया।
- महिलाओं और स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के सदस्यों ने प्रशिक्षण और प्रदर्शनों में सक्रिय रूप से भाग लिया।
- नीम के तेल और चिपचिपे जालों जैसी गैर-रासायनिक विधियों के माध्यम से कीट नियंत्रण पर ध्यान केंद्रित किया गया।



असंतुप्त जल प्रबंधन के प्रति जागरूकता:- गांवों में पेयजल जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें हमने समुदायों को जल प्रबंधन के बारे में जागरूक किया। इस कार्यक्रम में जल का पुनर्चक्रण और पुनः उपयोग करना सुरक्षित और टिकाऊ तरीका है, जिससे ताजे पानी की मांग कम होती है, पारिस्थितिक संतुलन बना रहता है, जल संरक्षण में सहायता मिलती है और भूजल का पुनर्भरण होता है। 16 गांवों में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया और कुल 274 सदस्यों ने इसमें भाग लिया।

पोषण जागरूकता कार्यक्रम: 19 गांवों में आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रमुख सामुदायिक सदस्यों के बीच पोषण संबंधी ज्ञान को बढ़ाना था, जिसमें विशेष रूप से निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया:

जैव-संवर्धनित फसलों का संवर्धन:- पोषण सुरक्षा में सुधार लाने और जलवायु परिवर्तन के प्रति प्रतिरोधी फसलों को बढ़ावा देने के लिए, जैव-संरचित बीज किस्मों का विकास किया गया।

क्रम	जैव- पोषक तत्वों से भरपूर फसल	गांव	किसान	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)
1	रागी	12	46	46
2	ज्वार (जावर जीएनजे-1)	30	183	183
3	छोटा बाजरा	18	109	109
4	मक्का (मजबूत किस्म का)	4	25	25
	कुल	64	363	363

आरएनजी द्वारा परिवारों को सहायता:- घरेलू पोषण को बेहतर बनाने और खाद्य आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के प्रयासों के तहत, चुनिंदा परिवारों को रसोई उद्यान विकसित करने के लिए सहायता प्रदान की गई।

कार्यक्रम का उद्देश्य:- परिवारों को अपने घरों के आसपास उपलब्ध भूमि का उपयोग करके अपनी सब्जियां उगाने के लिए प्रोत्साहित करना, जिससे ताजा, रसायन-मुक्त और पोषक तत्वों से भरपूर भोजन की उपलब्धता सुनिश्चित हो सके।

क्रम	गांव की संख्या	कोई भी परिवार कवर नहीं है
1	68	1842

एकीकृत मूल्य श्रृंखला विकास (IVCD): प्रमुख गतिविधियाँ

मूल्य श्रृंखला विकास और किसान संगठनों पर आधारित प्रशिक्षण/कार्यशालाएं आदि:- एक दिवसीय एक्सपोजर विजिट का आयोजन बनास एफपीओ राधनपुर, पाटन में किया गया। इसका उद्देश्य नर्मदा एफपीओ को इस एक्सपोजर के माध्यम से व्यवसाय की रणनीति और निदेशक मंडल की भूमिका विकसित करने में सहायता करना था। बनास के सीईओ दिलीपभाई और अध्यक्ष करशनभाई ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और बनास एफपीओ की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। प्रतिभागियों ने जीरा फसलों के बनास एफपीओ केंद्र का दौरा किया और गुणवत्तापूर्ण सामग्री प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिक उत्पादन तकनीक का अनुभव प्राप्त किया। कुल 4 और 8 सदस्यीय एफपीसी सदस्य इस एक्सपोजर विजिट में शामिल हुए: 1. रेवा एफपीसी गरुदेश्वर, 2. सागबारा खेदुत उत्पादक मंडली, 3. तिलकवाड़ा खेदुत उत्पादक मंडली, 4. ट्राइबल मार्ट वंद्री। अध्यक्ष, सीईओ और निदेशक मंडल भी इस एक्सपोजर विजिट में शामिल हुए।

यूपीएल द्वारा समर्थित डभोई मक्का प्रदर्शन प्लॉट में एक्सपोजर का दौरा किया गया। फाउंडेशन, डेमो प्लॉट में मक्का की एजेंटा किस्म किसानों द्वारा कटाई से उत्पादन अधिक है।

क्लस्टर स्तरीय संघ कार्यशाला:- देदियापाड़ा में आयोजित इस कार्यशाला में स्वयं सहायता समूह (एसएचजी), स्वयंसेवी संगठन (वीओ) और सामुदायिक वित्त संगठन (सीएलएफ) के अध्यक्ष, सचिव और सदस्य शामिल थे, कुल 45 महिलाओं ने भाग लिया। इसका उद्देश्य तालुका स्तर पर सामुदायिक वित्त संगठन को सक्रिय करना, स्वयं सहायता समूहों की समस्याओं का समाधान करना और समुदायों को समूहबद्ध दुग्ध उत्पादन और बकरी पालन कार्यक्रमों में शामिल करना था।

जागरूकता कार्यक्रम और अनुभव संबंधी दौरे:- काकडवा गांव में दो जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए और एक वर्मीकम्पोस्ट इकाई का दौरा कराया गया, जिसमें कुल 95 किसानों ने भाग लिया।

कृषि पद्धतियों के प्रति जागरूकता कार्यक्रम:- नवघाटा गांव में आयोजित इस कार्यक्रम ने किसानों को ड्रिप सिंचाई प्रणालियों के लिए जैन सिंचाई कंपनी से जोड़ा। इस कार्यक्रम में जैन सिंचाई टीम के सदस्यों और 25 किसानों ने भाग लिया।

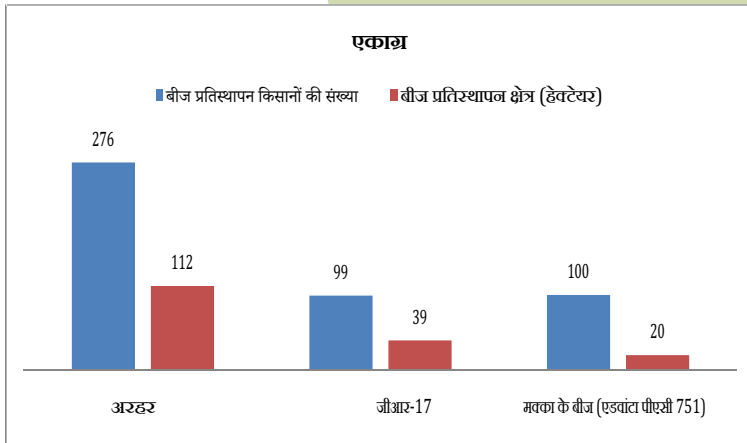
प्राकृतिक कृषि पद्धतियों के प्रति जागरूकता:- छटवाडा गांव में आयोजित इस कार्यक्रम में जीवमृत और अग्रियाल जैसी प्राकृतिक कृषि पद्धतियों पर ध्यान केंद्रित किया गया और केवीके देदियापाड़ा द्वारा जानकारी प्रदान की गई। कुल 17 किसानों ने भाग लिया।

विभाग का सहयोग:- केवीके ने प्रदर्शन के उद्देश्य से नागटपुर गांव के किसानों को जीआर-17 सरदार किस्म के बीज उपलब्ध कराए। साथ ही, कृषि विभाग द्वारा वंजार और नवगाम गांवों को जीटी-103 अरहर के बीज प्रदर्शन के उद्देश्य से दिए गए। और रिगानी गांव के 11 किसानों को जीटी-104 कपास के बीज प्रदर्शन के उद्देश्य से दिए गए। कुल 11 किसानों को केवीके द्वारा बीज उपलब्ध कराए गए।

डिया आउट कॉन्फ्रेंस:- यह कार्यक्रम डिजिटल माध्यम से आयोजित सम्मेलन के रूप में हुआ और वक्ता श्री बी.के. पोशिया, केवीके डेडियापाड़ा ने जलवायु अनुकूल कृषि पद्धतियों और प्राकृतिक कृषि पद्धतियों पर व्याख्यान दिया। 4 गांवों के किसानों ने डिजिटल माध्यम से भाग लिया और विस्तार कार्यकर्ताओं द्वारा मार्गदर्शन प्रदान किया गया। कुल 73 किसानों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

नेटवर्क लिंकेज मीटिंग एफपीसी:- देदियापाड़ा स्थित भूमिपुत्र एफपीसी कार्यालय में एफपीसी नेटवर्क संपर्क बैठक का आयोजन किया गया। दिनांक 12.08.2024: इस बैठक में कुल 7 एफपीसी अध्यक्ष, निदेशक मंडल और सीईओ ने भाग लिया। बैठक का उद्देश्य हितधारकों के साथ संपर्क स्थापित करना और एफपीसी के सामने आने वाले प्रमुख मुद्दों पर चर्चा करना था। एजेंडा में एमएसपी (न्यूनतम समर्थन मूल्य) भी शामिल था। भाग लेने वाली अन्य प्रतिभागी टीमों थीं: रेवा एफपीसी गरुदेश्वर, दक्षिण गुजरात किसान उत्पादक कंपनी, भूमिपुत्र एफपीसी, सागबारा खेत उत्पादक मंडली देदियापाड़ा, आदि औषधि एफपीसी, ट्राइबल मार्ट और विकास एफपीओ। हितधारक: संजयभाई (रिलायंस रिटेल), गौतम शर्मा (आईवीसीडी राज्य थीम सदस्य), एक्सिस बैंक, संजय कुमार (डब्ल्यूआरएमएस) और कुलदीप सोलंकी (जीयूजेपीआरओ)। बैठक में कुल 40 सदस्यों ने भाग लिया।

बीज प्रतिस्थापन:- उत्पादकता बढ़ाने और उच्च गुणवत्ता वाले बीजों के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए, बीज प्रतिस्थापन कार्यक्रम शुरू किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य कम उपज देने वाले पारंपरिक बीजों को उन्नत, प्रमाणित किस्मों से बदलना था ताकि उपज और किसानों की आय में वृद्धि हो सके। उद्देश्य: 1. प्रमाणित और उच्च प्रदर्शन वाले बीजों के माध्यम से उपज बढ़ाना। 2. मृदा स्वास्थ्य और फसल की सहनशीलता में सुधार करना। 3. बीज चयन और प्रबंधन पद्धतियों पर किसानों के ज्ञान को मजबूत करना।



भगवान ने अर्जुन से कहा, “तुम तो उनके लिए शोक करते हो जिनके लिए शोक नहीं करना चाहिए! फिर भी तुम बुद्धिमानों की तरह बातें करते हो; परन्तु बुद्धिमान तो न तो मृतकों के लिए शोक करते हैं और न ही जीवितों के लिए!”
- भगवत गीता

फसल कटाई के प्रयोग:

जीआर-17 क्यों चुनें: इस धान की परिपक्वता अवधि 113-115 दिन है, जबकि अन्य धानों की परिपक्वता अवधि 125-130 दिन है। प्रति एकड़ उत्पादन अधिक है। धान की ऊंचाई मध्यम है। कुल मिलाकर 160 किसानों ने जीआर-17 धान की खेती की है।

फसल कटाई प्रयोग प्रतिनिधि रूप से किए गए। इन वार्षिक रिपोर्टों और वास्तविक क्षेत्र डेटा के आधार पर फसल कटाई प्रयोग संकलित किए गए।

फसल कटाई प्रयोग: परिणामों का संक्षिप्त विवरण: 1. प्रदर्शन भूखंड: 5 भूखंडों में फसल कटाई प्रयोग – उपज 63 क्विंटल/हेक्टेयर। 2. नियंत्रण भूखंड: 5 भूखंडों में फसल कटाई प्रयोग – औसत उपज 50.90 क्विंटल/हेक्टेयर।

प्लाट	फसल का प्रकार	समूह	5*5 मीटर ² पैदावार (किलोग्राम में)
1	धान जीआर 17	प्रयोग	5.76
2	धान (हाइब्रिड)	नियंत्रण प्लॉट	4.63

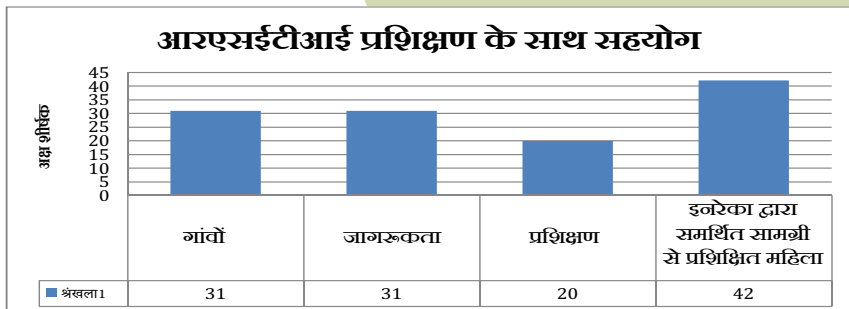
महिला उद्यमिता के लिए ग्रामीण आय में विविधता लाना:- (DRIWE)

जागरूकता/आजीविका कार्यशालाएँ/प्रसारण दौरा: शमशेरपुरा की महिलाओं द्वारा संचालित भरचवाड़ा डेयरी संयंत्रों का प्रसारण दौरा किया गया। कुल 25 महिलाओं ने डेयरी प्रसंस्करण संयंत्र का दौरा किया। इसका उद्देश्य शमशेरपुरा की बंद पड़ी डेयरी को पुनर्जीवित करना था। इच्छुक और सक्रिय महिलाएं डेयरी (महिला डेयरी) शुरू करने के लिए तैयार हैं। हाल ही में शमशेरपुरा की दूध उत्पादक महिलाएं दूध बेचने के लिए दूसरे गांवों में जा रही हैं। ये समुदाय के सामने प्रमुख चुनौतियां हैं। भरचवाड़ा में आयोजित प्रसारण कार्यक्रम में विशेष अतिथि श्री घनश्यामभाई पटेल, दुधधारा के अध्यक्ष ने डेयरी पंजीकरण संबंधी जानकारी दी।

दुधधारा डेयरी प्लांट का भ्रमण:- धवलीवर, भुतबेड़ा, बोरीपिथा गांवों के पशुपालकों ने दुधधर डेयरी संयंत्र का दौरा किया। इस दौरे का उद्देश्य बंद पड़ी डेयरी के पुनरुद्धार और नई महिला के पंजीकरण के बारे में जानकारी देना था। पशुपालकों को दुधधर डेयरी में दूध की कीमत और भुगतान प्रक्रिया के बारे में बताया गया। कुल 40 पशुपालकों ने दुधधर के चिलिंग प्लांट और पशु चारा संयंत्र का दौरा किया। श्री रमेशभाई वासावा, चिलिंग प्लांट मैनेजर, और चिरागभाई, पशु चारा सुपरवाइजर ने संयंत्र के बारे में जानकारी दी।

आरएसईटीआई नर्मदा सहयोग

कौशल विकास:- RSETI के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और बेरोजगार महिलाओं और युवाओं को जोड़ने के लिए ग्राम स्तर पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। दूसरा उद्देश्य कौशल उन्नयन और संभावित प्रशिक्षकों की पहचान करना था। RSETI नर्मदा द्वारा कुल आठ कार्यक्रमों का समर्थन किया गया, जिसमें गैर-सरकारी संगठन ने प्रशिक्षण के लिए उम्मीदवारों को जुटाया। जागरूकता कार्यक्रम 31 गांवों में आयोजित किए गए, जिनमें कुल 793 महिलाओं ने भाग लिया।



हे मेरे प्रभु! मैं आपकी रक्षा में खड़ा हूँ।
डर कहाँ है? क्या डर अब है?

-गुरु नानक

स्वयं सहायता समूह और स्वयंसेवी संगठन सहयोग कार्यक्रम

संस्थागत सुदृढीकरण: स्वयं सहायता समूहों और स्वयंसेवी संगठनों के बीच सहयोग बढ़ाने के लिए 10 कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन ग्राम स्तरीय संस्थाओं की बैठकों में अक्सर केवल स्वयंसेवी संगठन के अध्यक्ष और सचिव ही उपस्थित होते थे। इसका उद्देश्य सभी सदस्यों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना और प्रत्येक स्वयं सहायता समूह परिवार को आजीविका गतिविधियों में शामिल करके ग्रामीण गरीब परिवारों की आय बढ़ाना था।

आजीविका प्रशिक्षण/कौशल विकास:- पशुपालन प्रशिक्षण: पिपलापानी गांव में पशुपालन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। केवीके देदियापाड़ा के पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. धर्मेस बिमसारा ने प्रशिक्षण में मुख्य भूमिका निभाई। इस प्रशिक्षण में निम्नलिखित विषयों को शामिल किया गया: 1. पशु चिकित्सा सेवाएं, 2. पशु स्वास्थ्य, 3. सरकारी योजनाएं, 4. चारा विकास, 5. दुग्ध उत्पादन विकास। कुल 35 लाभार्थी इस प्रशिक्षण में शामिल हुए। सीओएफएस के तहत 31 चारा और 65 दुग्ध उत्पादन लाभार्थियों को सहायता प्रदान की गई।

बकरी पालन प्रशिक्षण:- ग्रामीण क्षेत्रों में बकरी पालन आजीविका का एक महत्वपूर्ण साधन है, समुदायों की आजीविका बकरी पालन पर निर्भर है, इसलिए हमारा उद्देश्य मौजूदा आजीविका में सुधार और आय में वृद्धि करना है। हमने तीन कार्यक्रम आयोजित किए हैं: सागबारा ब्लॉक के नविफाली गांव, गरुदेश्वर ब्लॉक के शमशेरपुरा गांव और नंदोद ब्लॉक के छटवाड़ा गांव। श्री अमितकुमार, बकरी पालन विशेषज्ञ, ने बकरी पालकों को प्रशिक्षण दिया। स्थानीय विक्रेताओं और बकरी पालकों के साथ मोलभाव करने के मुद्दे को हल किया गया, ताकि लाभार्थी अपनी बकरियों को तौलकर बेच सकें। बकरी के चारे का प्रबंधन: हमने एक नई पहल शुरू की है, जिसमें बकरी पालन को ग्लिरिसिडिया चारे पर आधारित किया जाता है। ग्लिरिसिडिया सेपियम का उपयोग मवेशियों, भेड़ों और बकरियों के लिए कटे और ले जाने वाले चारे के रूप में किया जाता है। इसकी उच्च प्रोटीन सामग्री इसे कम गुणवत्ता वाले उष्णकटिबंधीय चारे के पूरक के रूप में कार्य करने में सक्षम बनाती है। ग्लिरिसिडिया सेपियम को जलवायु के आधार पर हर 2 से 4 महीने में बार-बार काटा जा सकता है।



खनिज ईंट पर प्रशिक्षण:- स्थानीय स्तर पर खनिज ईंटें बनाने के लिए दुग्धपान और बकरीपालन करने वालों को 9 ग्रामों का प्रशिक्षण दिया गया। सीआरपी द्वारा दिए गए इस प्रशिक्षण में, व्यावहारिक प्रशिक्षण के तहत तोतावेत पाउडर (5 कि.ग्रा.), मुल्लानी मिट्टी (10 कि.ग्रा.), गुड़ (10 कि.ग्रा.), सफेद नमक (5 कि.ग्रा.), काला नमक (5 कि.ग्रा.), चूना (5 कि.ग्रा.), सरसों के बीज (30 कि.ग्रा.) और दादिया (10 कि.ग्रा.) जैसी सामग्रियों का उपयोग किया गया। कुल मिलाकर 300 ईंटें पशुपालकों द्वारा बनाई गईं। कुल 250 पशुपालक इसमें भाग ले रहे हैं।

डेयरी सहकारी समिति की शुरुआत की :- शिवालय महिला दूध मंडली शमशेरपुरा, गरुदेश्वर और याहामोगी महिला दूध उत्पादक सहकारी मंडली लिमिटेड नर्मदा जिला भरूच जिला सहकारी दूध उत्पादक संघ (दूधधारा) फेडरेशन हैं काम कर रहे हैं, लेकिन जिले के कुछ क्षेत्र में पारदर्शिता की कमी के कारण डेयरी बंद होने का मामला है, गांव में प्रबंधन का मुद्दा है हमारा उद्देश्य इस मुद्दे को हल करना और सहकारी संस्था की स्थापना के लिए प्रमोट ग्रुप के रूप में उस संस्था का पुनरुद्धार करना है। शमशेर पुरा और भूतबेड़ा गाँव के लोग दूध देने के लिए दूसरे गाँव जाते थे, जो गाँव से 6 से 5 किलोमीटर दूर था और महंगा पड़ता था। इसलिए हमने सखी मंडल समूह से सहकारी (डेयरी) मंडली शुरू करने का अनुरोध किया। सबसे पहले, सखी मंडल समूह ने दूध धारा डेयरी भाचरवाड़ा चिलिंग प्लांट और देदियापाड़ा के दूध संग्रहण केंद्रों का दौरा आयोजित किया और अध्यक्ष श्री चनश्याम पटेल और उनके सहायक कर्मचारियों से मुलाकात की और पंजीकरण के लिए महिला दूध मंडली के बारे में जानकारी दी। इस डेयरी से 60 लाभार्थी लाभान्वित हो रहे हैं।



डिजिटल और वित्तीय साक्षरता:- डिजिटल और वित्तीय साक्षरता का मुख्य उद्देश्य वित्तीय और डिजिटल साक्षरता के स्तर में सुधार करना है, ताकि महिलाओं को बचत करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। बैंकिंग क्षेत्र में वित्तीय लेनदेन को बढ़ावा देने के साथ-साथ, डिजिटल साक्षरता से संबंधित अन्य गतिविधियों को भी प्रोत्साहित किया जा सके। डिजिटल साक्षरता किसी व्यक्ति की टाइपिंग या डिजिटल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग करके जानकारी खोजने, उसका मूल्यांकन करने और उसे संप्रेषित करने की क्षमता है। यह सूचना और संचार तकनीकों का उपयोग करके जानकारी बनाने, उसका मूल्यांकन करने और उसे साझा करने में तकनीकी और संज्ञानात्मक क्षमताओं का संयोजन है। कुल मिलाकर, 67 गांवों में 2659 महिलाओं को डिजिटल और वित्तीय साक्षरता के बारे में सफलतापूर्वक जागरूकता प्रदान की गई है।

वित्तीय समावेशन के लिए पात्रता, योजनाओं और वित्तीय उत्पादों तक बेहतर पहुंच:- सरकार ने जिले में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं, जिनमें पीएमएसबीवाई, पीएमजेजेवाई, ई-श्रम, आभा आदि योजनाएं शामिल हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य क्षेत्र के प्रत्येक परिवार को बैंक खाता और अन्य वित्तीय सेवाओं तक पहुंच प्रदान करना है।

वित्तीय समावेशन के लिए पात्रता, योजनाओं और वित्तीय उत्पादों तक बेहतर पहुंच:- सरकार ने जिले में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं, जिनमें पीएमएसबीवाई, पीएमजेजेवाई, ई-श्रम, आभा आदि योजनाएं शामिल हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य क्षेत्र के प्रत्येक परिवार को बैंक खाता और अन्य वित्तीय सेवाओं तक पहुंच प्रदान करना है। सरकार ने दूरस्थ और वंचित आबादी तक पहुंचने के लिए मोबाइल बैंकिंग और डिजिटल लेनदेन जैसी प्रौद्योगिकी के उपयोग को भी बढ़ावा दिया है। इन पहलों का उद्देश्य व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति और वित्तीय स्थिरता में सुधार करना और बैंकिंग सुविधाओं से वंचित लोगों को औपचारिक वित्तीय प्रणाली में लाना है। हमने ग्रामीण क्षेत्रों में देखा है कि अधिकांश परिवार लेनदेन भुगतान, योजना आवेदन, आधार अपडेट और राशन कार्ड ई-केवाईसी जैसी समस्याओं का सामना कर रहे हैं। अब गुजरात सरकार प्रत्येक राशन कार्ड धारक का ई-केवाईसी अनिवार्य कर रही है। हमने ग्राम स्तर पर शिविर आयोजित किए हैं, जिनमें से 76 शिविरों में सफलतापूर्वक पात्रता शिविर पूरे किए गए हैं और एक वर्ष में 3826 लोगों का नामांकन किया गया है।

नर्मदा जिले में चावल मिल उद्यम

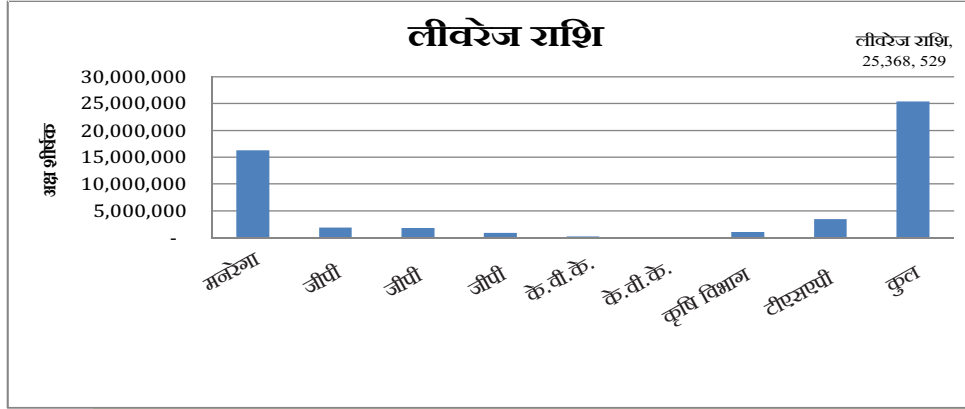
1. उद्देश्य: चावल मिल उद्यमों की स्थापना का मुख्य उद्देश्य था: धान की फसलों के लिए स्थानीय प्रसंस्करण सुविधाएं प्रदान करना। दूरदराज के गांवों में स्थित बाहरी चावल मिलों पर निर्भरता कम करना। स्वयं सहायता समूहों (SHG) के सदस्यों, विशेषकर महिलाओं के लिए आजीविका के अवसर उत्पन्न करना।



हिंदू धर्म वह शाश्वत दर्शन है जो सभी धर्मों का मूल है।

- एल्डस हक्सले

2024-25 कार्यक्रम वर्ष के अंतर्गत लेवरेज वर्क:- वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान, ग्रामीण लचीलापन और आत्मनिर्भरता कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न गांवों में योजनाओं और विभागीय प्रयासों के समन्वय और समन्वय के माध्यम से महत्वपूर्ण प्रगति हासिल की गई। रणनीति का उद्देश्य उच्च-प्रभावशाली, लागत-प्रभावी विकास समाधानों को लागू करने के लिए उपलब्ध सरकारी संसाधनों, योजनाओं और कई विभागों से तकनीकी सहायता का अधिकतम उपयोग करना था। प्रमुख विभाग और जिन योजनाओं का उपयोग किया गया:



निष्कर्ष और आगे का रास्ता

आजीविका कार्यक्रम 2024-25 ने सहभागी योजना, कौशल विकास और सतत संसाधन प्रबंधन के माध्यम से ग्रामीण समुदायों को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण प्रगति प्रदर्शित की है। इनरेका, रिलायंस फाउंडेशन और विभिन्न सरकारी विभागों के बीच सहयोग ने मौजूदा योजनाओं का प्रभावी ढंग से उपयोग करके समुदाय पर अधिकतम प्रभाव डाला है। आगे चलकर, जलवायु-लचीली खेती, महिला-नेतृत्व वाले उद्यम और डिजिटल समावेशन पहलों जैसे सिद्ध मॉडलों को व्यापक स्तर पर लागू करने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा ताकि नर्मदा जिले भर में स्थायी आत्मनिर्भरता और बेहतर आजीविका सुनिश्चित की जा सके।





नर्मदा जिले की बाजरा उत्पादक महिला "श्रीमती सविताबेन एस वसावा"



जिला सीएसआर और एनजीओ नेटवर्क



हस्तक्षेप महिला दिवस समारोह



रबी कृषि मेला: पुरस्कार एवं मान्यता

समाचार की मुख्य बातें

**भेड़तोते अग्रणीओ द्वारा मार्गदर्शन अपाणुं
ईनरेका संस्थान जाते
FPCनो वर्कशोप योजायो**

ईडियापाडा आते ईनरेका संस्थान अने दिवायन्स हाउसिंग संयुक्त उपक्रमे नर्मदा जिलेया काम करनी भेटुन. ईनरेका कंपनी (FPC)नो वर्कशोप सभामां आयलीं वलीं.

जेभा UPL, BAIF, KVKना सहयोगी आंगण वपी वसेबा FPO अने वेदनेसभो, ईरेडरेकरओ वापरुन देबा वलीं. आ वर्कशोपमा डी. विनीद कुमार डी.ए.के. प्रभुम ईनरेका संस्थान, ईडियापाडा कृषि विज्ञान-अनुसंधान डी. पी.डी.सी. डी. पी.के. पोसीया डी.वा. वरिड वेसांस, कृषि विज्ञान केंद्र ईडियापाडा, वेदनेसभो परेबा इएन सी.डी.ए. हाउसिंग संस्थान भेटुन. ईनरेका कंपनी साथे सहयोगनुं आडवान.

**संस्थाना प्रमुजे वृक्षोनुं मडलत समजाव्युं
देडियापाडानी ईनरेका संस्थान
द्वारा बागायती रोपानुं वितरण**

ईडियापाडा ईनरेका संस्थान द्वारा दिवायन्स हाउसिंग अने ईनरेका संस्थान संकलन ठामांत कौर वारुण बीम पर नर्मदा जिलेया २५ गावोमां ४५००० रुमा कपाडि जडामा, आनी बागायती रोपण संयुक्त उपक्रमे अने बीम वितरण करी. तस, सांग, वरिड वेसांस जेडुना रोपणमा आनी बागायती रोपण मुजम हाउसिंग संस्थाने उपर मुजम जडायुं वलीं.

**ईडियापाडा कृषि विज्ञान केंद्र जाते
आंतरराष्ट्रीय महिला
दिवसनी उजवणी कराई**

ईडियापाडा कृषि विज्ञान केंद्र जाते आंतरराष्ट्रीय महिला दिवसनी उजवणी कराई. ईडियापाडा कृषि विज्ञान केंद्र जाते आंतरराष्ट्रीय महिला दिवसनी उजवणी कराई. ईडियापाडा कृषि विज्ञान केंद्र जाते आंतरराष्ट्रीय महिला दिवसनी उजवणी कराई.

**आंगणवाडी वर्करने पोषण
वाटिकानी ताबीम अपाई**

ईडियापाडा ताबुकाना डी.बी.पाडा आते आवेली ईनरेका संस्थान अने दिवायन्स हाउसिंग संस्थाना सहयोगी देडियापाडा, सांगभारा अने गडुडेश्वरमां आठसीडीअसेस विभाग साथे रडीने कुल ५०० आंगणवाडी वर्करने ताबीम आपवामां आलीं वलीं. तेमज १२०० सरगवाना रोपणोनुं

**ईडियापाडा ताबुकाना डी.बी.पाडा जाते
पांच सभी मंडणोने कव्याई-२
टणवानी घंटी आपवामां आवी**

ईडियापाडा ताबुकाना डी.बी.पाडा जाते पांच सभी मंडणोने कव्याई-२ टणवानी घंटी आपवामां आवी. ईडियापाडा ताबुकाना डी.बी.पाडा जाते पांच सभी मंडणोने कव्याई-२ टणवानी घंटी आपवामां आवी.

अवधि के लिए निर्धारित
मूल लक्ष्यों से विचलन

मूल एओपी लक्ष्य निर्धारित किया गया था, लेकिन हमने एओपी योजना में बदलाव किया है और बजट बढ़ाया है, इसलिए इससे भौतिक और वित्तीय योजना में भी बदलाव आया है।

प्रमुख चुनौतियों का
सामना करना पड़ा

डेटा संकलन समय पर नहीं हो रहा है
ग्राम विकास समिति के कुछ सदस्यों की भागीदारी कम है
विस्तार कार्यकर्ता नौकरी बदल रहे हैं, इसलिए नए उम्मीदवार को कार्यक्रम को समझने में अधिक समय लग रहा है
सार्वजनिक संपत्तियों पर समुदाय का स्वामित्व नहीं है
कृषि पर प्राथमिक आजीविका के रूप में निर्भरता ग्रामीण समुदायों को अप्रत्याशित मौसम, बाजार में उतार-चढ़ाव और फसल खराब होने जैसे जोखिमों के प्रति संवेदनशील बनाती है
गैर-कृषि रोजगार के अपर्याप्त अवसर मौसमी बेरोजगारी का कारण बनते हैं
ग्राम स्तर पर राजनीतिक गतिशीलता

प्रोजेक्ट आउटपुट

समझौता ज्ञापन के अनुसार परियोजना के परिणाम प्राप्त किए गए।		आउटपुट हासिल किये गये					
कोड	आउटपुट विवरण	यूओएम	phy योजना वार्षिक	phy योजना वार्षिक	फिन योजना वार्षिक	फिन योजना वार्षिक	फ़ायदा
1.1	ग्राम पंचायत विकास योजना में ग्राम द्वारा जलवायु परिवर्तन से निपटने के उपायों को शामिल किया गया है।	गांवों की संख्या	47	46	438,000	429182.00	-
2.1	गांवों ने साझा संसाधनों का सहभागी मूल्यांकन किया और प्रबंधन योजना तैयार की।	गांवों की संख्या	46	59	383,565	383199.00	-
2.2	अतिरिक्त जल संचयन क्षमता का सृजन हुआ	लाख सह	14	10.03179	8,267,800	7875030.00	5,341,245
2.3	क्षेत्र को जल के कुशल प्रबंधन के अंतर्गत लाया गया	हेक्टेयरो की संख्या	300	326.8	600,000	599989.00	7,000
2.4	सार्वजनिक संसाधनों के संरक्षण और पुनर्स्थापन के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र	हेक्टेयरो की संख्या	346	346.93	2,500,000	2486582.00	1,413,250
2.5	जिन गांवों में पीने के पानी की बेहतर सुविधा उपलब्ध है	गांवों की संख्या	44	45	1,800,000	1791478.00	8,577,000
2.6	ग्रे वाटर प्रबंधन में लगे परिवार	परिवारों की संख्या	448	461	445,342	443600.00	2,227,720
2.7	जलवायु अनुकूल कृषि पद्धतियों (मृदा उर्वरता सुधार, प्रतिरोधी बीज, अंतरफसल, जल फसलें और आईएनएम) के अंतर्गत लाया गया क्षेत्र।	हेक्टेयरो की संख्या	1,700	1528.75	2,025,000	2022601.00	273,850
3.1	खाद्य उत्पादन और उपभोग में विविधता लाने वाले परिवार	परिवारों की संख्या	1,490	1500	610,105	609547.00	5,000
3.2	पोषक तत्वों से भरपूर और जैव-संवर्धित फसलों के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र	हेक्टेयरो की संख्या	125	182.8	150,000	150000.00	-
4.1	उन्नत उत्पादन पद्धतियों/नई कृषि प्रौद्योगिकियों के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र	हेक्टेयरो की संख्या	1,570	1409.7	2,475,000	2474960.00	8,227,697
4.2	किसान बेहतर कृषि पद्धतियों और/या नई कृषि तकनीकों को अपना रहे हैं और उनसे लाभान्वित हो रहे हैं।	किसानों की संख्या	1,570	1586	165,500	160182.00	-
5.1	किसान समूह (FPOS/SHG फेडरेशन/सहकारी समिति/PACS/किसानों के औपचारिक समूह)	किसान समूहों की संख्या	6	3	98,000	96072.00	-

बाजरा मिशन कार्यक्रम (मक्का की खेती)

संस्थान का राष्ट्रीय बीज निगम (एनएससी), नई दिल्ली के साथ दीर्घकालिक संबंध रहा है, जो केंद्रीय मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त निकाय है। डॉ. ए.के. सिंह, एनएससी के पूर्व वार्षिक महाप्रबंधक, से हम परिचित हैं क्योंकि हम 1990 से साथ मिलकर काम कर रहे हैं और अपनी कृषि सहकारी समिति के माध्यम से आदिवासी किसानों को प्रमाणित और सत्यापित बीज वितरित करते रहे हैं, जिससे उन्हें व्यापक लाभ हुआ है। अब भारत के प्रिय, आदरणीय और सम्मानित प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भारत में बाजरा मिशन की स्थापना की है, जहाँ मोरिया, कोड़ा, बंटी, रागी, मकई, ज्वार, बाजरा आदि जैसी स्थानीय और पारंपरिक बाजरा किस्मों की खेती की जाती है। डॉ. ए.के. सिंह और डॉ. सैन दास, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर), नई दिल्ली के पूर्व निदेशक, जो वर्तमान में भारत सरकार के बाजरा मिशन की सलाहकार समिति के सदस्य हैं, ने हमसे संपर्क किया और मक्का की खेती और संवर्धन के लिए हमारे संगठन का दौरा किया। हमारे क्षेत्र की मिट्टी मक्का की खेती के लिए अत्यंत उपयुक्त है। इसलिए, हमने इसमें रुचि दिखाई है क्योंकि हम पहले से ही आदिवासी किसानों के कृषि उत्पादन के माध्यम से आय को दोगुना करने के उद्देश्य से आजीविका कार्यक्रम पर काम कर रहे हैं, जो स्थानीय आकांक्षाओं और हमारे उद्देश्यों को भी पूरा कर रहा है।

डॉ. सैन दास और डॉ. ए.के. सिंह ने हमारे फील्ड स्टाफ के साथ हमारे खेत का दौरा किया। उन्होंने पाया कि मिट्टी की बनावट और उसकी नमी धारण क्षमता काफी उपयुक्त है और उन्होंने विशेष रूप से पॉपकॉर्न की अनुकूलित मक्का खेती शुरू करने का निर्णय लिया। पॉपकॉर्न पश्चिमी देशों में बहुत लोकप्रिय और मांग में है। दूसरी ओर, किसानों को अपनी उपज का बहुत अच्छा दाम मिलेगा, लेकिन कार्यक्रम शुरू होने से पहले हमने पाया कि फसल का मौसम लगभग समाप्त हो चुका था और अधिकांश क्षेत्र में किसानों ने पहले ही बुवाई कर दी थी, केवल कुछ ही किसान बचे थे जिन्होंने अपनी जमीन पर बुवाई की थी। इसके अलावा, कई ऐसे मुद्दे थे जो बहुत महत्वपूर्ण थे और जिन पर स्पष्टीकरण की आवश्यकता थी, जैसे:

1. विशेष/अनुकूलित प्रमाणित मक्का बीज की आपूर्ति।
2. किसानों की उपज की खरीद के लिए मूल्य श्रृंखला प्रणाली का विकास।
3. अन्य तकनीकी पहलू और जागरूकता संबंधी मुद्दे।



अंततः, हम निम्नलिखित बिंदुओं पर निष्कर्ष पर पहुंचे हैं।

यह परियोजना पहली बार शुरू की जा रही है, इसलिए इसे हमारे क्षेत्र और स्थानीय आदिवासी किसानों के लिए एक पायलट परियोजना माना जाएगा। प्रमाणित, अनुकूलित बीज इनरेका संस्थान द्वारा 5 किलो/एकड़ की दर से निशुल्क उपलब्ध कराए जाएंगे, जिसकी कीमत 15000 रुपये है।

क्षेत्र में नमी का स्तर इष्टतम है। हालांकि सिंचाई सुविधाओं की आवश्यकता है, इसलिए किसानों से सिंचाई की तैयारी के लिए सहमति आवश्यक है।

किसी भी प्रकार के अजैविक उर्वरक की आवश्यकता नहीं है, हालांकि आवश्यकता पड़ने पर इसका उपयोग किया जा सकता है।

किसी भी प्रकार के कीटनाशक की आवश्यकता नहीं है, हालांकि स्थानीय क्षेत्र में किसी भी प्रकार के रोग या जीवाणु के संक्रमण होने पर इसका उपयोग किया जा सकता है।

जैविक खेती पर जोर दिया जाएगा, हालांकि हमारे क्षेत्र में एक पायलट परियोजना होने के कारण यह छूट दी गई है।

बायबैक नीति अपनाई जाएगी।

बीज की आपूर्ति करने वाली और उपज खरीदने के लिए तैयार कंपनी द्वारा परिवहन सुविधाएं प्रदान की जाएंगी।

બીજ વિતરણ સે પહેલે હી 30 રુપયે પ્રતિ કિલો કી દર તય કર દી ગઈ થી તાકિ સ્થાનીય કિસાનોં કા વિશ્વાસ જીતા જા સકે, ક્યોંકિ ઇસ સંબંધ મેં ડનસે પહેલી બાર બાતચીત કી જા રહી થી। ઢાને સહિત પૂરે કોન કા વજન કિયા જાણુગા ઓર પૂરે કોન કે લિપે ભુગતાન કિયા જાણુગા તાકિ મક્કા કે ઓગે કી પ્રક્રિયા કે લિપે ગંતવ્ય તક પહુંચને તક ડસમેં નમી બની રહે। ઇસી તરહ હમને આપસી સહમતિ સે તય કિપે ગપે ઢાંચે કે અનુસાર કામ કિયા। અંતતઃ, થાઈ પાયલટ પ્રોજેક્ટ બેહદ સફલ રહા। સમી આદિવાસી કિસાન બહુત ખુશ હૈં ક્યોંકિ ડનહેં અપની ડપજ કા ડોગુને સે અધિક ઢામ મિલા ઓર ભુગતાન સીધે ઢો કિસ્તોં મેં જમા કિયા ગયા: પહેલી કિસ્ત ફસલ કા વજન કરને કે તુરંત બાદ ઓર ઢૂસરી કિસ્ત સામગ્રી કે પ્રસંસ્કરણ કેંદ્ર પહુંચને પર।

વર્ષ 2023-24 કે ઢૌરાન પરિયોજનાઓં કે પરિણામ ઇસ પ્રકાર હૈં:

ચયનિત 630 આદિવાસી કિસાનોં મેં સે કુલ 650 કો બીજ ઢિપે ગપે। લાપરવાહી, પાની કી અપર્યાપ્ત ડપલબ્ધતા ઓર આંશિક બુવાઈ આદિ કે કારણ લગભગ 50 ઇકઢ ફસલ ડરાબ હો ગઈ, ક્યોંકિ કુછ કિસાનોં કો આપૂર્તિ કિપે ગપે નપે કિસ્મ કે બીજોં પર ભરોસા નહીં થા।

ઁલોઁલોરૌમાર ઁલોપી, સોરાપાઢા, પંચપિપરી, પાના, પરીઢી, ડમરાન, જાવલી જૈસે ગાંવોં મેં અછ્હી સંભાવનાં હૈં।

18 કિસાનોં ને 2 ડન/ઇકઢ સે અધિક ડપજ પ્રાપ્ત કી ઓર 4 કિસાનોં ને 2.5 ડન/ઇકઢ ડપજ પ્રાપ્ત કી, જો ડત્સાહજનક હૈ। શેષ કિસાનોં ને 1.00 ડન/ઇકઢ ડપજ પ્રાપ્ત કી।

અંતતઃ, હમ યહ નિષ્કર્ષ નિકાલતે હૈં કિ નર્મઢા ઘાટી મેં મક્કા કી ઁલેતી કી અપાર સંભાવનાં હૈં। હમને આગામી અવધિ મેં અધિક ક્ષેલ કો કવર કરને કા નિર્ણય લિયા હૈ। ઇસ વર્ષ લગભગ 500 ડન મક્કા ડગાયા ગયા હૈ।

જમ વનવ ઢાન સુકારાના માપણા કરા વિસ્તારનાવા કલવા ચારાગ ઠોર રેકલરવાના આપવા.

ઢેડિયાપાડા તાલુકાના ટીબાપાડા ખાતે આવેલી ઈનરેકા સંસ્થાન ઢ્વારા પોપકોર્ન મકાઈની વેરાયટીનું વાવેતર કરાયું

૧૦૦૦ એકરથી વધારે જમીનમાં ૧૫૦૦ ડનથી વધારે ડત્પાઢન થયું

। ઢેડિયાપાડા ।
ઢેડિયાપાડા તાલુકાના ટીબાપાડા ખાતે આવેલી ઈનરેકા સંસ્થાન વડા ડો. વિનઢ ડુમાર કૌશિક ઢ્વારા અને મેનેજર ગોપાલ સિંહ ઢનિય ઢ્વારા ઇલ્લા ૩-૪ વર્ષ મકાઈની પોપકોર્ન વેરાયટી વાવેતર કરાવી રલેલ છે.
નાના અને સિમાંત ખેડૂતઓને મોઢા ભાવનું બિયારણ આપી અને તમામ ખેડૂતને તાલીમ આપી યાલુ વર્ષ નર્મઢા જિલ્લાના ઢેડિયાપાડા, સાગબારા, નાંઢોઢ, અને ગરૂડેશ્વર તાલુકામાં ૧૦૦૦ એકરથી વધારે જમીનમાં પોપકોર્ન મકાઈનું વાવેતર કરવામા આવ્યુ છે જેમા લગભગ ૧૫૦૦ ડનથી વધારે ડત્પાઢન થયું છે.
આ મકાઈ જેનીટીકલ્લી મોડીકાઈ બિયારણ છે. જે ખેડૂતને

આપવામા આવે છે, અને વાવેતરથી લઈને લાણણી (કાપણી) સુધી તકનીકી માલેતી નિષ્ણાત ઢ્વારા વોટ્સએપ ગ્રુપ, રૂબરૂ કિલ્લ વીઝીટના માધ્યમથી આપવામા આવે છે. સંસ્થાન ઢ્વારા આ મકાઈ અગાઉથી નકરી કરેલા ભાવમાં મકાઈના ડોઢા સાથે ખરીઢી કરવામા આવે છે. અને ખેડૂતને તેઓના પૈસા સીધા જ બેંક ખાતામા ઢ્રાન્સફર કરવામાં આવે છે, અને ડત્પાઢન પ્રમાણે ઢર વર્ષે ભાવમાં પણ વધારો કરવામા આવે છે.
આ મકાઈને સોનીપત ઢરીયાણા લઈ જવામાં આવે છે જેમાં પ્રોસેસીંગ યુનિટ છે આ પ્રોસેસીંગ યુનિટમા નાના-મોટા અને કલર પ્રમાણે મકાઈના ઢાણાનું વિભાજન કરવામાં આવે છે અને સારી ક્વાલીટીનો માલ વિઢેશમાં

(અમેરીકા) જાય છે અને સિનેમાથર, રેસ્ટોરન્ટ, ડોટેલમાં ડપયોગ થાય છે. આ પોપકોર્ન મકાઈ પાકની ઘણી સંભાવના છે. ઢાલમાં ૮ રાજ્યોમાં કામગીરી ચાલે છે જે ઈનરેકા સંસ્થાન કાર્યકર્તાઓ ડ રાજ્યોના આદિવાસી વિસ્તારોમાં જવાબઢારી સંભાળી રહ્યા છે. નવી તકનીક, સારી વેરાયટી આપીને ડત્રત ખેતી તરફ લઈ જઈએ એમ ઈનરેકા સંસ્થાન વડા ડો. વિનઢ ડુમાર કૌશિકે જણાવ્યું હતું.

મઢે.ભરૂચના મામલતઢાર જેઠ્ઠે ઁઢરઢી અરરરર : વિરવ ડાલરભાઈ પાલેજ
સામાજિકા : જગમ-મરઢા અધિકારીઓ, આથી લગભગ વરખના તેમજ કિત ઢર પાણીયેલ અરરરરના ઢાલો અને કમીનિટ ડે ડેવર્લ કોસાઢી,ભોલાવ,ભગ્ય ઘાતે ઘલેલ છે કે જામ પરમાગત ભોલાવ ઢલતે મરઢાની મરઢાઓ ઢાખી મલેલ નથી માટે સઢરૂ મરઢા કોઢાં ડેવર જગાયેલ નંબરથી અરરર ઢાખલ



वार्षिक दिवस और सांस्कृतिक गतिविधियाँ ।



वार्षिक दिवस और सांस्कृतिक गतिविधियाँ ।



वार्षिक दिवस और सांस्कृतिक गतिविधियाँ ।



રાજ્ય શિક્ષણમંત્રી અને ભરૂચના સાંસદ ઉપસ્થિત રહ્યાં ટિંબાપાડાની ઈનરેકા સંસ્થાનનો ૪૧મા વાર્ષિકોત્સવની ઉજવણી કરાઈ

આદિવાસીઓ ભોરિયા અને કાનમાં બાવિયાથી આગળ વધી શિક્ષણમાં પ્રગતિ સાધે

દિલ્હીવાસી | સરકારના આદિજાતિ વિકાસ, પ્રાથમિક, માધ્યમિક અને શ્રેણી શિક્ષણ વિભાગના કમિન્ટેડ મંત્રીની ઉપસ્થિતિમાં ઈનરેકા સંસ્થાન ટિંબાપાડા (દિલ્હીવાસી)નો ૪૧મો વાર્ષિક કાર્યક્રમ શાળા કેમ્પસમાં યોજાયો હતો. તેઓ સાથે ભરૂચના સાંસદ સહિત મહાનુભાવો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

આ પ્રસંગે રાજ્યના શિક્ષણ મંત્રી ડૉ. કુબેરભાઈ ડિંગેરે જણાવ્યું હતું કે, ગુજરાતના તત્કાલીન મુખ્યમંત્રી અને વડાપ્રધાન મોદીએ આ ટિંબાપાડાની ભૂમિ પરથી કન્યા કેળવણી મહોત્સવના માધ્યમથી શિક્ષણ યસની

જ્યોત પ્રગટાવી હતી. જેના પરિણામો આજે આપણે પ્રત્યક્ષ જોઈ રહ્યાં છીએ. આધુનિક ટેકનોલોજીના યુગમાં શિક્ષણ લેવું અનેકવિધ પરિવર્તનો અર્થમાં છે. તેના પરિણામે દેશમાં થયાં લાંબા સમય પછી નવી શિક્ષણ નીતિ-૨૦૨૦ની આપણને ભેટ મળી છે. આ નવી શિક્ષણ નીતિમાં મનુષ્ય ધરતરના ૯ મૂલ્યોને સામેલ કરાયા છે. જેનો મુખ્યમંત્રી ભુપેન્દ્ર પટેલના નેતૃત્વમાં રાજ્ય સરકાર તબક્કાવાર અમલવારી કરી રહી છે.

ભરૂચના સાંસદ મનસુખ વસાવાએ જણાવ્યું હતું કે, નવંદા જિલ્લાના શિક્ષણ લેવું આવેલા પરિવર્તન થઈ આજે શિલ્પો વિકસતા

માર્ગે આગળ વધી રહ્યાં છે. સ્ટેચ્યુ ઓફ યુનિટીની આપણા જિલ્લામાં મોટી ભેટ મળી છે. જેના કારણે જિલ્લાઓ પ્રવાસન લેવું વિચરમાં નામના મેળવી છે. ઈનરેકા સંસ્થાન દ્વારા સંચાલિત વેદના નર્સિંગ એન્ડ પ્રેમ મેડિકલ કોલેજનું મંત્રી ડૉ. કુબેર ડિંગેરે, ભરૂચના સાંસદ મનસુખ વસાવા, સંસ્થાના સંચાલકો અને મહાનુભાવોના હસ્તે લોકાર્પણ કરાયું હતું. બાદમાં આ ક્ષેત્રેમાં પ્રદર્શ મેળાનાર વિદ્યાર્થીઓની શરણ વિધિ યોજાઈ હતી. કાર્યક્રમમાં ઈનરેકા સંસ્થાના દ્વારા સંચાલિત વિવિધ શાળાના બાળકો દ્વારા સંસ્કૃતિક કાર્યક્રમો પ્રસ્તુત કર્યાં હતાં.



નર્મદા નદી કિનારે શાળામાં



સંકલિપ્ત રામનાચર
દિલ્હીવાસી તાલુકામાં ઠેર ઠેર વસારોપણ કરાયું

દિલ્હીવાસી ટિંબાપાડામાં આવેલી ઈનરેકા સંસ્થાનના વડા ડૉ. વિનોદ કુમાર કોલિક અને મેનેજર મોગલ દિલ્હી વિભાગના અધિકારીઓને વેળા ઈનરેકા સંસ્થાન ટિંબાપાડા, રીલોન્સ સ્ટોર-ઇન્ડિયા અને સુપરમાર્કેટ-વેલ્ફેર વિભાગ દ્વારા નવંદા જિલ્લાના અમરનાથ તાલુકાના કોલિક, મોલદામ, ટિંબાપાડા તાલુકાના ગામ પુનવેર, અને કણાક, નીલકા તાલુકાના જાનવર અને મુડેડેન્સ તાલુકાના મોલકા તરફ મોડેરન અને આધુનિક શાળા માટે જમણારોપણ કરવામાં આવ્યું. જેમાં ઈનરેકા સંસ્થાન અને લીલાદેવ સર્વિસીની સીમ, તાલુકા વેન્ગ સર્કલ અંકલકેર, ભરૂચ વખતની સીમ, અને આમરના પાલક તમામ ૧૫ થી ૩૫૦ જેવા અધ્યાત્મિક દિગ્ગજીવી ઈત્યાદી સંસ્થાના અધ્યક્ષો અને સ્ટાફના સહયોગે આ શાળાઓની નિર્માણ કાર્યવાહી શરૂ કરવામાં આવી હતી.

અંકલેવરની ત્રણ ટીકરીઓ પામ્યાં, પરિષિ અને સ્વરાએ આરંભીયમ રજૂ કર્યું
અંકલેવર | અંકલેવર તરફમાં આવેલા સ્વાદરા ભવન ખાતે ટીકરીઓ અને સેલ નુન-યોદાન દ્વારા નવ ટીકરીઓ પામ્યાં. પરિષિ અને સ્વરાએ મેળાના અધિકારીઓને આરંભ કરાવ્યો હતો. ભવન ખાતેના નુનના સમયે આ બંને અધ્યક્ષ અને સુવિન્ય પત્રી સ્ટેજ પરથી તેમણે આરંભીયમ કર્યું છે. આજે પાંચ, પરિષિ અને સ્વરાને મેળાના અધિકારીઓ અને સ્ટાફના સહયોગે આ શાળાઓની નિર્માણ કાર્યવાહી શરૂ કરવામાં આવી હતી. કાર્યક્રમમાં અધિકારી વિભાગ નેત્રી ગુરુદાસ શેઠાએ અમરનાથ અને અંકલેવર સંસ્થાના મહાનુભાવોને સુવિન્યોદિત કરવામાં આવ્યાં હતાં. આ પ્રસંગે રાજ્યના શિક્ષણ મંત્રી ડૉ. કુબેરભાઈ ડિંગેરે અને ભરૂચના સાંસદ મનસુખ વસાવા ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

રોહતા ગામે સિલસેલે અનિભિયા નિમ્નુલન યોજના અંગેનાં અવેરને સંકાયકમ યોજાયો
દિલ્હીવાસી | દિલ્હીવાસીની કોલિકાપાટા ખાતે આવેલી ઈનરેકા સંસ્થાનના વડા ડૉ. વિનોદ કુમાર કોલિક અને મેનેજર મોગલ દિલ્હી વિભાગના અધિકારીઓને વેળા ઈનરેકા સંસ્થાન ટિંબાપાડા, રીલોન્સ સ્ટોર-ઇન્ડિયા અને સુપરમાર્કેટ-વેલ્ફેર વિભાગ દ્વારા નવંદા જિલ્લાના અમરનાથ તાલુકાના કોલિક, મોલદામ, ટિંબાપાડા તાલુકાના ગામ પુનવેર, અને કણાક, નીલકા તાલુકાના જાનવર અને મુડેડેન્સ તાલુકાના મોલકા તરફ મોડેરન અને આધુનિક શાળા માટે જમણારોપણ કરવામાં આવ્યું. જેમાં ઈનરેકા સંસ્થાન અને લીલાદેવ સર્વિસીની સીમ, તાલુકા વેન્ગ સર્કલ અંકલકેર, ભરૂચ વખતની સીમ, અને આમરના પાલક તમામ ૧૫ થી ૩૫૦ જેવા અધ્યાત્મિક દિગ્ગજીવી ઈત્યાદી સંસ્થાના અધ્યક્ષો અને સ્ટાફના સહયોગે આ શાળાઓની નિર્માણ કાર્યવાહી શરૂ કરવામાં આવી હતી.

CHEVALIER ACADEMY
રશિયામાં ગર્વમેન્ટ

શ્રી

વિદેશમાં આવેલી એક માત્ર રશિયામાં ગર્વમેન્ટ 475 ગુજરાતી વિદ્યાર્થીઓએ 7500 જેટલા ભારતીયોને CHEVALIER ACADEMY MBSB વિદ્યાર્થીઓને Classes હારી FMGE

છેલ્લા ૧૭ વર્ષમાં 490 જેટલા છેલ્લા ચાર વર્ષમાં ૦ TOP-5 માં અને ભારત ૦ સાથે સાથે રશિયાથી MB

પરીક્ષામાં પણ અમરનાથ ગુજરાતમાં BEET-PGTની પદવી USA અને UK માં પણ સમાવી કોચી Science ના MBSB હારી USA માં સર્કલમાં PLAB અને ENGLAND ના

દેશીય વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ સ્થાન
રશિયાની મેડિકલ કોલેજની પ્રાસ હોલ ભારત • યુનિવર્સિટીના કેમ્પસ સુધીના • યુગ્મ ૧ એડવોકેટ ઈન્ટરકલ લાઈવેલી ની સુવિધા • NEXT FMM ગણતરી પરીક્ષાઓની પ્રમાણ વધવી •

વિદેશમાં MBSB હારવા • લોન માટેની સંપૂર્ણ પ્રદિપ્તિ સોલંકી

ભરૂચ સેમી

તા. 08.06.2025 (૧)

HOTEL GINGER : 1, કેવેલ પહેલ સુધર માર્કેટ ઈ સ્ટામ, મોરીદેર

સેમીનાર સમય : સવારે ૧૧ બેઠકો આઈસ : 113, પેલે માર્કેટ

For more information Please Call



આદિવાસી સમાજ હાથમાં કલમ અને કાનમાં સ્ટેથોસ્કોપ સાથે વિકાસ કરી રહ્યો છે : શિક્ષણમંત્રી

ઈનરેકા સંસ્થાન ટિંબાપાડાનો 41મો વાર્ષિકોત્સવ ઉજવણી
દેશકાળ | રાજ્યશિક્ષણ મંત્રી ડૉ. કુબેરભાઈ ડિંગેરે અને ભરૂચના સાંસદ મનસુખ વસાવા ઉપસ્થિત રહ્યાં ટિંબાપાડાની 41મો વાર્ષિકોત્સવ ઉજવણી કરાઈ હતી. આ પ્રસંગે રાજ્યના શિક્ષણ મંત્રી ડૉ. કુબેરભાઈ ડિંગેરે જણાવ્યું હતું કે, ગુજરાતના તત્કાલીન મુખ્યમંત્રી અને વડાપ્રધાન મોદીએ આ ટિંબાપાડાની ભૂમિ પરથી કન્યા કેળવણી મહોત્સવના માધ્યમથી શિક્ષણ યસની જ્યોત પ્રગટાવી હતી. જેના પરિણામો આજે આપણે પ્રત્યક્ષ જોઈ રહ્યાં છીએ. આધુનિક ટેકનોલોજીના યુગમાં શિક્ષણ લેવું અનેકવિધ પરિવર્તનો અર્થમાં છે. તેના પરિણામે દેશમાં થયાં લાંબા સમય પછી નવી શિક્ષણ નીતિ-૨૦૨૦ની આપણને ભેટ મળી છે. આ નવી શિક્ષણ નીતિમાં મનુષ્ય ધરતરના ૯ મૂલ્યોને સામેલ કરવામાં આવ્યાં છે.

આ પ્રસંગે રાજ્યના શિક્ષણ મંત્રી ડૉ. કુબેરભાઈ ડિંગેરે જણાવ્યું હતું કે, ગુજરાતના તત્કાલીન મુખ્યમંત્રી અને વડાપ્રધાન મોદીએ આ ટિંબાપાડાની ભૂમિ પરથી કન્યા કેળવણી મહોત્સવના માધ્યમથી શિક્ષણ યસની જ્યોત પ્રગટાવી હતી. જેના પરિણામો આજે આપણે પ્રત્યક્ષ જોઈ રહ્યાં છીએ. આધુનિક ટેકનોલોજીના યુગમાં શિક્ષણ લેવું અનેકવિધ પરિવર્તનો અર્થમાં છે. તેના પરિણામે દેશમાં થયાં લાંબા સમય પછી નવી શિક્ષણ નીતિ-૨૦૨૦ની આપણને ભેટ મળી છે. આ નવી શિક્ષણ નીતિમાં મનુષ્ય ધરતરના ૯ મૂલ્યોને સામેલ કરવામાં આવ્યાં છે.

આ પ્રસંગે રાજ્યના શિક્ષણ મંત્રી ડૉ. કુબેરભાઈ ડિંગેરે જણાવ્યું હતું કે, ગુજરાતના તત્કાલીન મુખ્યમંત્રી અને વડાપ્રધાન મોદીએ આ ટિંબાપાડાની ભૂમિ પરથી કન્યા કેળવણી મહોત્સવના માધ્યમથી શિક્ષણ યસની જ્યોત પ્રગટાવી હતી. જેના પરિણામો આજે આપણે પ્રત્યક્ષ જોઈ રહ્યાં છીએ. આધુનિક ટેકનોલોજીના યુગમાં શિક્ષણ લેવું અનેકવિધ પરિવર્તનો અર્થમાં છે. તેના પરિણામે દેશમાં થયાં લાંબા સમય પછી નવી શિક્ષણ નીતિ-૨૦૨૦ની આપણને ભેટ મળી છે. આ નવી શિક્ષણ નીતિમાં મનુષ્ય ધરતરના ૯ મૂલ્યોને સામેલ કરવામાં આવ્યાં છે.

ગુજરાત સરકારના આદિજાતિ વિકાસ અને શિક્ષણ વિભાગના મંત્રીશ્રી ડૉ. કુબેરભાઈ ડિંગેરોની ઉપસ્થિતિમાં ઈનરેકા સંસ્થાન ટિંબાપાડાનો ૪૧મો વાર્ષિકોત્સવ યોજાયો



ભારત સરકાર
દિલ્હીવાસી | રાજ્યના શિક્ષણ મંત્રી ડૉ. કુબેરભાઈ ડિંગેરે અને ભરૂચના સાંસદ મનસુખ વસાવા ઉપસ્થિત રહ્યાં ટિંબાપાડાની ૪૧મો વાર્ષિકોત્સવ ઉજવણી કરાઈ હતી. આ પ્રસંગે રાજ્યના શિક્ષણ મંત્રી ડૉ. કુબેરભાઈ ડિંગેરે જણાવ્યું હતું કે, ગુજરાતના તત્કાલીન મુખ્યમંત્રી અને વડાપ્રધાન મોદીએ આ ટિંબાપાડાની ભૂમિ પરથી કન્યા કેળવણી મહોત્સવના માધ્યમથી શિક્ષણ યસની જ્યોત પ્રગટાવી હતી. જેના પરિણામો આજે આપણે પ્રત્યક્ષ જોઈ રહ્યાં છીએ. આધુનિક ટેકનોલોજીના યુગમાં શિક્ષણ લેવું અનેકવિધ પરિવર્તનો અર્થમાં છે. તેના પરિણામે દેશમાં થયાં લાંબા સમય પછી નવી શિક્ષણ નીતિ-૨૦૨૦ની આપણને ભેટ મળી છે. આ નવી શિક્ષણ નીતિમાં મનુષ્ય ધરતરના ૯ મૂલ્યોને સામેલ કરવામાં આવ્યાં છે.

આ પ્રસંગે રાજ્યના શિક્ષણ મંત્રી ડૉ. કુબેરભાઈ ડિંગેરે જણાવ્યું હતું કે, ગુજરાતના તત્કાલીન મુખ્યમંત્રી અને વડાપ્રધાન મોદીએ આ ટિંબાપાડાની ભૂમિ પરથી કન્યા કેળવણી મહોત્સવના માધ્યમથી શિક્ષણ યસની જ્યોત પ્રગટાવી હતી. જેના પરિણામો આજે આપણે પ્રત્યક્ષ જોઈ રહ્યાં છીએ. આધુનિક ટેકનોલોજીના યુગમાં શિક્ષણ લેવું અનેકવિધ પરિવર્તનો અર્થમાં છે. તેના પરિણામે દેશમાં થયાં લાંબા સમય પછી નવી શિક્ષણ નીતિ-૨૦૨૦ની આપણને ભેટ મળી છે. આ નવી શિક્ષણ નીતિમાં મનુષ્ય ધરતરના ૯ મૂલ્યોને સામેલ કરવામાં આવ્યાં છે.

રાજ્ય શિક્ષણમંત્રી અને ભરૂચના સાંસદ ઉપસ્થિત રહ્યાં ટિંબાપાડાની ઈનરેકા સંસ્થાનનો ૪૧મા વાર્ષિકોત્સવની ઉજવણી કરાઈ

આદિવાસીઓ ભોરિયા અને કાનમાં બાવિયાથી આગળ વધી શિક્ષણમાં પ્રગતિ સાધે

દિલ્હીવાસી | સરકારના આદિજાતિ વિકાસ, પ્રાથમિક, માધ્યમિક અને શ્રેણી શિક્ષણ વિભાગના કમિન્ટેડ મંત્રીની ઉપસ્થિતિમાં ઈનરેકા સંસ્થાન ટિંબાપાડા (દિલ્હીવાસી)નો ૪૧મો વાર્ષિક કાર્યક્રમ શાળા કેમ્પસમાં યોજાયો હતો. તેઓ સાથે ભરૂચના સાંસદ સહિત મહાનુભાવો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

આ પ્રસંગે રાજ્યના શિક્ષણ મંત્રી ડૉ. કુબેરભાઈ ડિંગેરે જણાવ્યું હતું કે, ગુજરાતના તત્કાલીન મુખ્યમંત્રી અને વડાપ્રધાન મોદીએ આ ટિંબાપાડાની ભૂમિ પરથી કન્યા કેળવણી મહોત્સવના માધ્યમથી શિક્ષણ યસની






જ્યોત પ્રગટાવી હતી. જેના પરિણામો આજે આપણે પ્રત્યક્ષ જોઈ રહ્યાં છીએ. આધુનિક ટેકનોલોજીના યુગમાં શિક્ષણ લેવું અનેકવિધ પરિવર્તનો અર્થમાં છે. તેના પરિણામે દેશમાં થયાં લાંબા સમય પછી નવી શિક્ષણ નીતિ-૨૦૨૦ની આપણને ભેટ મળી છે. આ નવી શિક્ષણ નીતિમાં મનુષ્ય ધરતરના ૯ મૂલ્યોને સામેલ કરવામાં આવ્યાં છે. જેનો મુખ્યમંત્રી ભુપેન્દ્ર પટેલના નેતૃત્વમાં રાજ્ય સરકાર તબક્કાવાર અમલવારી કરી રહી છે.

ભરૂચના સાંસદ મનસુખ વસાવાએ જણાવ્યું હતું કે, નવંદા જિલ્લાના શિક્ષણ લેવું આવેલા પરિવર્તન થઈ આજે શિલ્પો વિકસતા

માર્ગે આગળ વધી રહ્યાં છે. સ્ટેચ્યુ ઓફ યુનિટીની આપણા જિલ્લામાં મોટી ભેટ મળી છે. જેના કારણે જિલ્લાઓ પ્રવાસન લેવું વિચરમાં નામના મેળવી છે. ઈનરેકા સંસ્થાન દ્વારા સંચાલિત વેદના નર્સિંગ એન્ડ પ્રેમ મેડિકલ કોલેજનું મંત્રી ડૉ. કુબેર ડિંગેરે, ભરૂચના સાંસદ મનસુખ વસાવા, સંસ્થાના સંચાલકો અને મહાનુભાવોના હસ્તે લોકાર્પણ કરાયું હતું. બાદમાં આ ક્ષેત્રેમાં પ્રદર્શ મેળાનાર વિદ્યાર્થીઓની શરણ વિધિ યોજાઈ હતી. કાર્યક્રમમાં ઈનરેકા સંસ્થાના દ્વારા સંચાલિત વિવિધ શિક્ષણના બાળકો દ્વારા સંસ્કૃતિક કાર્યક્રમો પ્રસ્તુત કર્યાં હતાં.



उपलब्धियाँ/पुरस्कार

क्रमांक	पुरस्कार का नाम	पुरस्कार प्रदान करने वाला प्राधिकरण	वर्ष	फ़ोटो / दस्तावेज़
1	प्रशंसा पत्र	वीवीवी कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए नाबार्ड अहमदाबाद के डीजीएम द्वारा अभिसम्मान	1992	फ़ाइलों में मौजूद न होने के कारण उपलब्ध नहीं है
2	प्रशंसा पत्र	एसबीआई के साथ स्वयं सहायता समूहों को बढ़ावा देने में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए नाबार्ड अहमदाबाद के डीजीएम द्वारा अभिसम्मान	1996	फ़ाइलों में मौजूद न होने के कारण उपलब्ध नहीं है
3	प्रशंसा पत्र	एसबीआई के साथ स्वयं सहायता समूहों को बढ़ावा देने में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए नाबार्ड अहमदाबाद के डीजीएम द्वारा अभिसम्मान	1998	फ़ाइलों में मौजूद न होने के कारण उपलब्ध नहीं है
4	राष्ट्रीय स्वच्छता पुरस्कार	समुदाय में स्वच्छता और साफ-सफाई को बढ़ावा देने में योगदान के लिए नासा द्वारा सम्मानित	2000	
5	उद्धरण	वर्ष 2005 में नर्मदा जिले के देदियापाड़ा ब्लॉक के 27 गांवों में जलसंभर विकास और जल एवं मृदा संरक्षण कार्यक्रम को क्रियान्वित करने के लिए तत्कालीन मुख्यमंत्री और वर्तमान प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा प्रशंसा पत्र	2005-06	
6	हिंदू रत्न पुरस्कार (राष्ट्रीय स्तर)	महाराष्ट्र के पुरे में आदिवासी समुदाय के कल्याण के लिए समर्पित सेवाओं के लिए हिंदू समुदाय के नेता द्वारा सम्मानित	2011	  

क्रमांक	पुरस्कार का नाम	पुरस्कार प्रदान करने वाला प्राधिकरण	वर्ष	फ़ोटो / दस्तावेज़
7	रीवा न मोती	एन.डी. ग्रुप, नई दिल्ली द्वारा लॉकडाउन-2020 के दौरान जरूरतमंद आदिवासी परिवारों को मुफ्त खाद्य किट वितरित करके कोरोना योद्धा के रूप में उत्कृष्ट योगदान के लिए जिला स्तरीय पुरस्कार।	2020	 
8	नर्मदा रतन (जिला स्तर)	कोविड-19 के दौरान सराहनीय स्वास्थ्य सुविधाएं और दवाएं उपलब्ध कराने और मरीजों को मुफ्त उचित उपचार प्रदान करने में उत्कृष्ट योगदान के लिए जिला स्तरीय पुरस्कार।	2021	 
9	नर्मदा रतन (जिला स्तर)	पूरे जिले में संचालित आजीविका कार्यक्रम के माध्यम से स्थानीय आदिवासी किसानों की आय बढ़ाने में उत्कृष्ट योगदान के लिए जिला स्तरीय पुरस्कार।	2023	
10	नर्मदा रतन (जिला स्तर)	स्वास्थ्य, आजीविका और पर्यावरण के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए जिला स्तरीय पुरस्कार।	2024	  
11	नर्मदा रतन (जिला स्तर)	भारत के गौरवशाली प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किए गए सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन कार्यक्रम के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए जिला स्तरीय पुरस्कार।	2025	

सरकारी समितियों में प्रतिनिधित्व

सदस्य, राज्य निधि समिति (एससीएसवीई), गुजरात सरकार
सदस्य, सलाहकार समिति, गुजरात राज्य, दूरसंचार मंत्रालय, भारत सरकार
अध्यक्ष, आवासीय विद्यालय एवं स्नातक परीक्षा सदस्य, गुजरात राज्य शाला संचालक महामंडल
सदस्य, विश्व खाद्य कार्यक्रम सलाहकार समिति, डीआरडीए, नर्मदा
पूर्व सदस्य, संभागीय समिति, विश्व खाद्य कार्यक्रम, राजपीप्ला रेंज, नर्मदा
अध्यक्ष, नर्मदा भरूच जिले के आवासीय विद्यालय एवं छात्रावास
अध्यक्ष, जिला आश्रमशाला संचालित मंडल नर्मदा
सदस्य, टेलीफोन सलाहकार समिति, गुजरात, दूरसंचार मंत्रालय, भारत सरकार
पूर्व सदस्य राजपीपला, नर्मदा स्थित जिला आदिवासी विकास मंडल (टीएसपी) के सदस्य
नई दिल्ली स्थित सीएपीएआरटी में विशेषज्ञों के पैनल में पूर्व परियोजना विशेषज्ञ
भारत सरकार के माइक्रोफाइनांस संगठन (आईसीएमएफ) के न्यासी
नर्मदा जिले की जिला स्वास्थ्य समिति के सदस्य
नर्मदा जिले की जिला आरसीएच समिति के सदस्य
जिला पीडीएस समिति के सदस्य
नर्मदा जिले की जिला सांप्रदायिक शांति बहाली समिति के सदस्य
जिला वन पुनर्वास समिति के सदस्य
एसआईआरडी के राज्य स्वच्छ भारत मिशन के संसाधन व्यक्ति
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जिला टास्क फोर्स के सदस्य

वित्त संबंधी विवरण

वित्त के स्रोत

वभारत सरकार, ग्रामीण क्षेत्त एवं रोजगार मंत्रालय
भारत सरकार, जनजातीय मामलों का मंत्रालय
गुजरात सरकार, ग्रामीण विकास विभाग
गुजरात सरकार, जनजातीय विकास विभाग
भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
गुजरात सरकार, जनजातीय विकास विभाग
भारत सरकार, महिला एवं बाल विकास विभाग
जनजातीय उप-योजना, राल्पीप्ला
जिला शिक्षा/जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यालय, भानुच
गुजरात सरकार, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय
यूनिसेफ इंडिया
जीआईसी आरई आरई सीएसआर
रिलायंस फाउंडेशन सहभागिता
ज़ोमैटो द्वारा उन बोर्डिंग और अतिरिक्त छात्रों को भोजन उपलब्ध कराना जो किसी भी स्रोत से भोजन सहायता प्राप्त नहीं कर रहे हैं

वित्त का स्रोत

विभिन्न राज्य एवं केंद्र सरकार के विभाग	50%
सीएसआर/डब्ल्यू-पार्टनरशिप इंटरनेशनल संस्था विदेशी वित्तपोषण एजेंसियां	20%
कृषि, दुग्ध उत्पादन और फल उत्पादन से प्राप्त आय	10%
स्थानीय योगदान	10%
लाभार्थी योगदान	10%

**SCHEDULE-IX
{Vide Rule 17(1)}**

Name of the Public Trust : - **International Rural Education Cultural Association, Dediapada,
(CONSOLIDATED)**

Trust Reg. No : - **E-5762/Ahmedabad**

Address of Trust : - **INRECA Complex, Rajjipla Road, Timbapada, Po. Ta. Dediapada
Dist. Narmada -393040**

Ph. No : **02649 234333/34** E mail ID : **info@inreca.com**

Name of Trustee : - **Dr. Vinod kumar Koushik**

Address : - **INRECA Complex, Rajjipla Road, Timbapada, Po. Ta. Dediapada
Dist. Narmada -393040**

Ph. No : **9825321721** E mail ID : **drvinodkoushik@Gmail.com**

Details Relating to Bank Account :

Name of Bank : SBI Dediapada Account no : 10736312873
Branch : Dediapada Address : Dediapada

Bank account number relating to transaction of foreign contribution of

Trust : **4010666814 SBI New Delhi Main Branch**

F. C. R. A. No : **041990027 Date : 11/09/1985**

New Alloted F.C.R.A.No.:041990089 Date : 15/02/2019

INCOME & EXPENDITURE A/c. FOR THE YEAR ENDED 31/03/2025

EXPENDITURE	Amt. in Rs.	INCOME	Amt. in Rs.
To Expenditure in respect of Properties As per Annexure	29,400.00	By Interest As per Annexure	166,611.00
To Administrative Expenses As per Annexure	13,816,380.77	By Donation As per Annexure	2,939,850.00
To Audit Fees	259,400.00	By Grant As per Annexure	73,269,272.00
To Expenses on Object of the Trust	72,514,450.91	By Income from other Sources As per Annexure	30,699,467.00
To Excess Income over Expenditure, Trans. To B/Sheet	20,455,568.32		
Grant Total	107,075,200.00	Grant Total	107,075,200.00

UDIN : 25156225BMOPFI5409

As per our report of even date

For, Keyur Patel & Co.

Chartered Accountants

CA Ubedullah M. Khatri

Partner

Mem No : 156225

FRN No : 126346W

Dediapada, Dated :- 12/10/2025



(Handwritten signature)

President
INRECA Sansthan

SCHEDULE-VIII
{Vide Rule 17(1)}

Name of the Public Trust :-

**International Rural Education Cultural Association, Dediapada,
(CONSOLIDATED)**

Name of the Trust :- **International Rural Educational Cultural Association, Dediapada**

Trust Reg. No :- **E-5762/Ahmedabad**

Address of Trust :- **INRECA Complex, Rajpipla Road, Timbapada, Po. Ta. Dediapada**

Dist. Narmada -393040

Ph. No : **02649 234333/34**

E mail ID : **info@inreca.com**

Name of Trustee :- **Dr. Vinod kumar Koushik**

Address :- **INRECA Complex, Rajpipla Road, Timbapada, Po. Ta. Dediapada**

Dist. Narmada -393040

Ph. No : **9825321721**

E mail ID : **drvinodkoushik@Gmail.com**

Details Relating to Bank Account :

Name of Bank : SBI Dediapada
Branch : Dediapada

Account no : 10736312873
Address : Dediapada

Bank account number relating to transaction of foreign contribution of

Trust : **4010666814 SBI New Delhi Main Branch**

F. C. R. A. No : **041990027**

Date : **11/09/1985**

New Alloted F.C.R.A.No.:**041990089**

Date : **15/02/2019**

BALANCE SHEET AT 31st MARCH-2025

FUNDS & LIABILITIES	Amt. in Rs.	PROPERTIES & ASSETS	Amt. in Rs.
Trust Funds	500.00	Immovable Properties	28,042,098.48
As per last year		As per Annexure	
Other Earmarked Funds	3,349,300.86	Dead Stock & Furniture	37,042,087.34
As per Annexure		As per Annexure	
Loans Secured & Unsecured	1,719,280.26	Investment	0.00
As per Annexure		As per Annexure	
Current Liabilities	28,680,546.44	Loans	731,468.00
As per Annexure		As per Annexure	
Reserve Fund	0.00	Advance	4,284,122.00
Income & Exp. A/C		Cash & Bank Balance	3,024,744.06
Balance as per last B/S	18,919,324.00	As per Annexure	
Add : Profit for the year	<u>20,455,568.32</u>		
	39,374,892.32		
Grant Total	73,124,519.88	Grant Total	73,124,519.88
	=====		=====

UDIN : 25156225BMOPFI5409

As per our report of even date

This above Balance the best of my/our belief contains a true account of the Funds & Liabilities and of the Property and Assets of
As per our report of even date

For, Keyur Patel & Co.
Chartered Accountants


CA Ubedullah M. Khatri
Partner
Mem No : 156225
FRN No : 126346W
Dediapada, Dated :- 12/10/2025





President
INRECA Sansthan

न्यासियों का बोर्ड

नाम	पदनाम
डॉ विनोद कुमार एम कौशिक	संस्थापक, संरक्षक और अध्यक्ष
सुश्री माया रानी वी कौशिक	ट्रस्टी
श्री. गोपाल सिंह डी क्षत्रिय	ट्रस्टी
एर. प्रशांत कौशिक	ट्रस्टी
श्री. सोनजीभाई एन वसावा	ट्रस्टी

कार्यकारी समिति के सदस्य

नाम	ट्रस्टी
डॉ विनोद कुमार एम कौशिक	संस्थापक, संरक्षक और अध्यक्ष
श्री गोपालसिंह डी. क्षत्रिय	सदस्य
श्री सोनजीभाई एन वसावा	सदस्य
सुश्री रंजनबेन आर चौधरी	सदस्य
श्री चंदनभाई आर वसावा	सदस्य
श्री रायसिंगभाई एन वसावा	सदस्य
सुश्री सेजलबेन ए. मैसुरिया	सदस्य

पदाधिकारी

नाम	पदनाम
डॉ विनोद कुमार एम कौशिक	अध्यक्ष और सीईओ
श्री. गोपाल सिंह डी क्षत्रिय	प्रबंधक
श्रीमती माया रानी कौशिक	निदेशक
अभि. प्रशांत कौशिक	मानद निदेशक

नाम	पदनाम
श्री. वर्षाबेन एस वसावा	प्रभारी प्रधानाचार्य, एसडी सीनियर सेकेंडरी स्कूल
श्री. चंदनकुमार आर, वसावा	जिला परियोजना समन्वयक
सुश्री रंजनबेन चौधरी	प्रधानाचार्य, एसडी शिशु शिक्षा सदन
डॉ. हिरेन एम पटेल	एम.बी.एस. आरएमओ, एनएचआरसी अस्पताल
डॉ. हार्दिक वसावा	एमओ.ओपीडी विभाग, एनएचआरसी अस्पताल
डॉ. पार्थ चौधरी	एमओ.ओपीडी एनएचआरसी अस्पताल
डॉ स्नेहाबेन वसावा	एमओ.ओपीडी एनएचआरसी अस्पताल
श्री. मनोज के वसावा	स्वास्थ्य समन्वयक
सुश्री हेतलबेन वसावा	प्रभारी प्रधानाचार्य, वंदना नर्सिंग एंड पेरा मेडिकल कॉलेज, तिंबापाड़ा
श्री नीलेशभाई वसावा	एलडीसी, वंदना नर्सिंग एंड पेरा मेडिकल कॉलेज, तिंबापाड़ा
सुश्री राधाबेन वसावा	लैब तकनीशियन, वंदना डायग्नोसिस सेंटर
स्वातिबेन मनसुखभाई वसावा	लैब तकनीशियन, वंदना डायग्नोसिस सेंटर
जगदीशभाई महेंद्रभाई वसावा	लैब तकनीशियन, वंदना डायग्नोसिस सेंटर
श्री. सकारामभाई वसावा	प्रधानाचार्य, एसडी आश्रमशाला, तिंबापाड़ा
सुश्री देवीबेन एस वसावा	प्रधानाचार्य, वैदेही कन्या आश्रमशाला, पंगम
श्री. चिंतन पटेल	प्रधानाचार्य, अपग्रेड एसडी आश्रमशाला, तिंबापाड़ा
श्री. हेमन्त वसावा	प्रधानाचार्य, अपग्रेड वी.के. आश्रमशाला, तिंबापाड़ा
श्री. मानसिंह खत्री	कार्यालय प्रबंधन पर्यवेक्षक
सुश्री प्रियंका वसावा	लेखाकार
श्री. देवेन्द्र भाई आर. सोलंकी	आईटी सेल समन्वयक
श्री विपुलकुमार ए वसावा	सहायक लेखाकार
सुश्री सेजल ए. मसुरिया	सहायक शिक्षक, एएस पंगम

NAME	DESIGNATION
सुश्री रमीला जी वसावा	एसडी गर्ल्स हॉस्टल की रेक्टर
श्री. अल्केशभाई डी. वसावा	एमआईएस ऑपरेटर
सुश्री राधिका गामित	सहायक शिक्षिका सह अध्यक्ष, पीओएसएच समिति
श्री. भावेश कोरलवाला	सहायक शिक्षिका सह पीओएसएच समन्वयक
श्री. सुनीलभाई सी वसावा	कॉम्प्लेक्स गार्डन प्रबंधन
श्री. दिलीपभाई वसावा	आर.वी. हॉस्टल, टिंबापाड़ा की रेक्टर
सुश्री मीनाक्षीबेन वसावा	एसडीके हॉस्टल की सहायक रेक्टर
श्री. श्यामभाई घरती	कृषि फार्म सहायक
सुश्री उर्वशी वसावा	रिसेप्शनिस्ट
श्री नीलेशभाई वसावा	रेडियोलॉजी सहायक
श्री विपुल वसावा	ड्राइवर सह वाहन रखरखाव



आजीविका कार्यक्रम के फील्ड स्तर के कर्मचारी
डीपीसी श्री चंदन वासावा के साथ



इनरेका कॉम्प्लेक्स में अन्नपूर्णा कैटीन

एकता में मिलकर रहने का सुख और आनंद अनुभव करें।

- सामवेद 133-1

संगठन की कानूनी स्थिति

बॉम्बे पब्लिक ट्रस्ट के अंतर्गत पंजीकृत, पंजीकरण संख्या E-5762/अहमदाबाद, दिनांक 04.12.1984

इनरेका पैन कार्ड संख्या एएए13801आर, दिनांक 11.09.1985

इनरेका पैन संख्या बीआरडीआई00911बी दिनांक 24.07.2014 आयकर आयुक्त कार्यालय, वडोदरा द्वारा आयकर अधिनियम की धारा 12A के अंतर्गत पंजीकृत, संख्या आरडी/एसआईबी/110-03-1/84-85, दिनांक 28.01.1985

वित्तीय राजस्व एजेंसी पंजीकरण संख्या 041990089, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली। दिनांक 15.09.2019 को पंजीकृत, 31.03.2024 तक नवीनीकृत।

वडोदरा से आयकर छूट के लिए धारा 12ए के तहत पंजीकृत, पंजीकरण संख्या एएएटी13801आरई20214 दिनांक 28.05.2021

पंजीकरण संख्या बीआरडी/एसआईबी/110-03-1/84-85 दिनांक 28.01.1985। धारा 80(G) के तहत कर मुक्त। दिनांक 24.09.2021 को पंजीकरण संख्या एएएटी 3801आरएफ2008801 के तहत पुनर्वैधीकृत, वित्तीय वर्ष 2022-23 से 2026-27 तक प्रभावी।

ग्रामीण विकास विभाग गांधी नगर से ग्रामीण विकास गतिविधियों को संचालित करने वाली नोडल एजेंसी।

भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा नर्मदा जिले के लिए मातृ गैर सरकारी संगठन के रूप में चयनित।

संयुक्त राष्ट्र लोक सेवा कार्यक्रम (UNPP) द्वारा पंजीकृत, एक राष्ट्रीय नागरिक समाज संगठन, पंजीकरण संख्या 8901

पंजीकरण संख्या 8401, दिनांक 0/11/2019

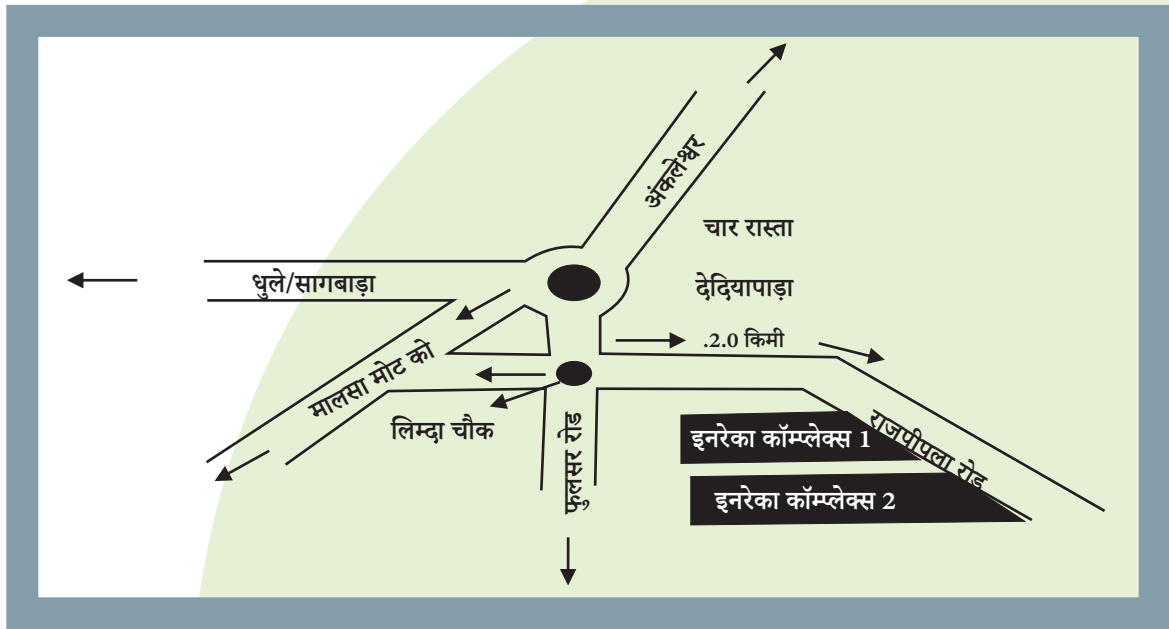
सीएसआर पंजीकरण संख्या - सीएसआर00007693, दिनांक 04.06.2021

ईएफपी पंजीकरण संख्या - ईपीएफ-एसआरबीआरएच2896960000, आयुक्त, भविष्य निधि, नई दिल्ली द्वारा जारी

वंदना नर्सिंग और पैरामेडिकल कॉलेज, पंजीकरण संख्या - स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, गुजरात सरकार, पंजीकरण संख्या: एचएफडब्ल्यूडी/एनसीएफ/ई-फाइल/7/2024/3907/ईजीपीएनएमसी, गांधीनगर, अनुक्रमणिका संख्या। जीएनएम: 1134 और एएनएम: 3137 किमी जोड़ें

सीडीएमओ, नर्मदा के लिए एनएचआरसी का क्लिनिकल पंजीकरण नंबर GUJNAR202500049PR दिनांक: 11.04.2025।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के लिए प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (पीएम-जे) पंजीकरण संख्या IN2410027100 दिनांक: 09.10.2025



मानचित्र में दमन नदी के किनारे स्थित राजपीपला रोड के आरक्षित वन क्षेत्र की ओर दादियापाड़ा मुख्य सड़क से लगभग 1.0 किमी दूर इनरेका परिसर का स्थान दर्शाया गया है।



भारत धर्म की जननी है। इसमें विज्ञान और धर्म पूर्ण सामंजस्य में समाहित हैं, और यही हिंदू धर्म है, और भारत ही एक बार फिर विश्व की आध्यात्मिक जननी बनेगी।

-एनी बेसेंट



राष्ट्रीय हिंदू रत्न पुरस्कार का क्षण



इनरेका

इंरेका कॉम्प्लेक्स, राजपिपला रोड,
डेडियापाड़ा - 393 040
जिला-नर्मदा (गुजरात)
फ़ोन: (02649) 234333/234334

एच.ओ. (लाइसनिंग उद्देश्य)
इंरेका संस्थान
405 डीडीए-2. जिला केंद्र, जनक पुरी,
नई दिल्ली-110058
फ़ोन नंबर 011-47086926



Inreca Sansthan OFFICIAL WEBSITE LINK: - <https://inreca.com/>



TWITTER:- <https://x.com/inrecasansthan>



LinkedIn: <https://www.linkedin.com/company/inreca-sansthan/>



Face book:- <https://www.facebook.com/people/International-Rural-Education-Cultural-Association-इनरेका/100068284392470/?mibextid=ZbWKwL>



Instagram:- <https://www.instagram.com/koushikdrvinodkumar?igsh=ZHQxZzBmcWo5cjhr>



Youtube:- <https://www.youtube.com/@drvinodkumarkoushik2017>